ओ३म्

सत्यार्थ-सौरभ

मार्च -२०१३

मार्च-2013 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 10 ◆ उदयपुर

सौरभ बिखरा दिग्दिगन्त में नील गगन घन में

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १५

माँ

माँ कबीर की साखी जैसी
तुलसी की चौपाई-सी
माँ मीरा की पदावली-सी
माँ है ललित रुबाई-सी।
माँ वेदों की मूल चेतना
माँ गीता की वाणी-सी
माँ त्रिपिटिक के सिद्ध सुक्त-सी
लोकोत्तर कल्याणी-सी।
माँ द्वारे की तुलसी जैसी
माँ बरगद की छाया-सी
माँ कविता की सहज वेदना
महाकाव्य की काया-सी।
माँ अषाढ़ की पहली वर्षा
सावन की पुरवाई-सी
माँ बसन्त की सुरभि सरीखी, बगिया की अमराई-सी।
माँ यमुना की स्याम लहर-सी, रेवा की गहराई-सी
माँ गंगा की निर्मल धारा, गोमुख की ऊँचाई-सी।
माँ ममता का मानसरोवर हिमगिरि सा विश्वास है,
माँ श्रद्धा की आदि शक्ति-सी कावा है कैलाश है।
माँ धरती की हरी दूब-सी, माँ केशर की क्यारी है। पूरी सृष्टि निछावर जिस पर, माँ की छवि ही न्यारी है।
माँ धरती के धैर्य सरीखी, माँ ममता की खान है। माँ की उपमा केवल है माँ, सचमुच ही भगवान है।

– निदा फाजली

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ–सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
फाल्गुन कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८९

March - 2013

सत्यार्थ–सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

देर आयद दुरुस्त आयद ०८

इदं राष्ट्राय इदं न मम २४

न कनिष्ठासो न ज्येष्ठासो १०

श्रीमद्दयानन्द जयन्ती पर विशेष १५

समाचार १९

हलचल २०

०५ वेद सुधा
१३ महर्षि दयानन्द का सार्वभौमवाद
१७ क्या हो इनका अंजाम
१८ हृदय बदलें
२१ बाल शिक्षा
२२ रोकें–कन्या भ्रूण हत्या
२५ शब्द यात्रा
२६ आम आदमी पर देवरों की मार
२८ मधुमेह (डायबिटीज) - कारण व उपचार
३० काव्य सुधा

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १ अंक - १०

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४ , ९३१४५३५३७६, ९८२९६२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

उतरी हैं आँगन में,
किरणें सुनहरी
लेकर बधाई
जन्म दिन की,
समेट लें इनको
खुशियों के संग ....
फूलों सा सुरभित है
आपका जीवन
महकाए हैं आपने
अनगिनत आँगन
आपका आशीष मिले
जब स्नेह से
हम परिभाषित हो जायें ...
'भूयश्च शरद शतात्' साकार हो
आपके जीवन में
आज हर दिल में यही अरमान हैं ,
ताकि ऋषि दयानन्द की बगिया खिल-खिल जाए

९०वें जन्मदिवस पर
न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

"Never be afraid to raise your voice for honesty and truth and compassion against injustice and lying and greed. If people all over the world...would do this, it would change the earth." **- William Faulkner**

"We must always take sides. Neutrality helps the oppressor, never the victim. Silence encourages the tormentor, never the tormented." **- Elie Wiesel**

"Nothing strengthens authority so much as silence." **- Leonardo da Vinci**

"To sin by silence, when they should protest, makes cowards of men." **- Ella Wheeler Wilcox**

"If you are neutral in situations of injustice, you have chosen the side of the oppressor." **- Desmond Tutu**

"If I were to remain silent, I'd be guilty of complicity." **- Albert Einstein**

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

विनम्र अपील

नवलखा महल, उदयपुर, वह पवित्र स्थल है जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास प्रवास किया तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे युगान्तरकारी ग्रन्थ का प्रणयन सम्पूर्ण किया। कालान्तर में महाराणा सज्जन सिंह जी का यह राजकीय अतिथि निवास जीर्ण-शीर्ण हो गया था। अक्टूबर १९८१ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश-शताब्दी समारोह भव्यता के साथ मनाया जिसमें एक लाख से ज्यादा आर्यजन सम्मिलित हुए। तभी आर्यों की इस माँग ने जोर पकड़ा कि नवलखा महल उपरोक्त कारणों से हमारा पवित्र स्थल है इसे आर्यों को सौंपा जाए। पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती व पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (तत्कालीन मंत्री-राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा) के विशेष प्रयासों से अन्ततोगत्वा यह भव्य स्मारक बनाने हेतु १९९२ में यह भवन आर्यों को हस्तगत हुआ। तत्समय में यह भवन पूर्णरूपेण जर्जर था। पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी ने स्वयं के पास से लाखों रु. लगा इसे भव्य स्मारक का स्वरूप प्रदान किया।

१९९२ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नेतृत्व में हुए अधिग्रहण समारोह से लेकर अब तक प्रतिवर्ष आयोजित भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों में विश्व भर से शायद ही कोई ऐसे संन्यासी, विद्वान्, आर्य नेता शेष रहे होंगे जिन्होंने यहाँ पधार कर इस पवित्र स्थली की गौरव गाथा का गान न किया हो। **सारांश यह कि सभी आर्यों के हृदयस्थल में अवस्थित यह भवन आज बीस वर्ष पश्चात् पुनः जीर्ण-शीर्ण हो रहा है, अतः इसके क्षरण को रोकना तथा सुन्दरता प्रदान करना अन्य सभी परियोजनाओं से भी अधिक आवश्यक हो गया है। इसमें यदि हम प्रमाद करेंगे तो यह कर्तव्यच्युत् होना ही होगा।** अतः उदार दानी आर्य महानुभावों व समस्त आर्यजनों की सेवा में अर्थ-दान हेतु यह विनम्र अपील है। आशा ही नहीं विश्वास है आप इसे अनसुनी नहीं करेंगे। आपका अर्थ सहयोग आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

कृपया न्यास के पक्ष में चैक/ड्राफ्ट/धनादेश द्वारा बड़ी-छोटी आहुतियाँ प्रदान कर अनुगृहीत करें।

आप यह राशि न्यास के खाता सं. जिसका विवरण नीचे है, में भी जमा करा सकते हैंः-

खाताधारक- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास,
नवलखा महल,गुलाब बाग,उदयपुर
यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN ०५३१०१४
बैंक में राशि जमा करवावें तो सूचित अवश्य करें।

निवेदक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, उदयपुर

ओ३म्

वेद सुधा

द्वेष का अभावः आध्यात्मिकता की चरमसीमा

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्व० ३/३०/१

(सहृदयम्) एक हृदयता (सामनस्यम्) एकमनता और (अविद्वेषम्) निर्वैरता (वः) तुम्हारे लिए (कृणोमि) मैं करता हूँ। (अन्यो अन्यम्) एक दूसरे को (अभि) सब ओर से (हर्यत) तुम प्रीति से चाहो (अघ्न्या इव) जैसे न मारने योग्य गौ (जातम्) उत्पन्न हुए (वत्सम्) बछड़े को [प्यार करती है]।

इस मंत्र में सहृदयता, एकमनता और द्वेषरहित होने का आदेश दिया गया है। परमात्मा ने आदेश मनुष्यमात्र को दिया है। वेद ने अद्भुत उपमा देकर मनुष्य को समझाया है कि तुम एक-दूसरे को ऐसे प्रीतिपूर्वक चाहो जैसे गाय उत्पन्न हुए बछड़े को प्यार करती है। गाय का अपने बछड़े के प्रति प्रेमपूर्ण आचरण मनुष्य में तभी आ सकता है जब वह मंत्र के पहले भाग में वर्णित गुणों को मन में धारण करे क्योंकि जो मन में धारण किया जाता है, वही शरीर द्वारा आचरण में लाया जाता है।

सहृदयं का अर्थ है दूसरे के सुख-दुःख को समझना, दयालुता और रसिकता। प्रकरण के अनुसार यहाँ दूसरे के सुख-दुःख को समझने का अर्थ ही उपयुक्त प्रतीत होता है। सामनस्यं से अभिप्राय मन की एकता से है। हमारे मन एक हों अर्थात् हमारे मन के भावों में एक दूसरे के प्रति विपरीतता की भावना न हो। अविद्वेषं से अभिप्राय है द्वेष का अभाव। द्वेष का अर्थ है कि किसी बात के मन को न भाने या अप्रिय लगने की प्रवृत्ति अथवा शत्रुता।

एक-दूसरे के सुख-दुःख को समझना और मानसिक भावों की एकता मैत्रीभाव में देखी जाती है, परन्तु जब द्वेष की भावना चल रही हो तो उस समय सहृदयता और सामनस्य को बनाये रखना बड़ा कठिन हो जाता है। सहृदयता और सामनस्य की पूर्ण सिद्धि तभी होती है जब व्यक्ति द्वेषरहित हो। मानसिक और आध्यात्मिक जगत् की सबसे बड़ी समस्या द्वेष का वशीकार है। जब द्वेष पर वशीकार हो जाए तो सहृदयता और सांमनस्य की समस्या नहीं रहती। अतः द्वेष का वशीकार आध्यात्मिक जगत् की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

वेद भगवान ने द्वेषरहित होने पर बहुत बल दिया है-

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन। -ऋ० १०/६३/१२

हे विद्वान् जनो! वैर को हमसे दूर हटाओ।

ज्याके परि णो नमाश्मानं तन्वं कृधि।
वीडुर्वरीयोरातीरप द्वेषांस्या कृधि॥ -अथर्व० १/२/२

हे इन्द्र! जय के लिए हमको सर्वथा झुका। हमारे शरीर को पत्थर-सा दृढ़ बना दे। तू दृढ़ होकर विरोधों और द्वेषों को हटाकर बहुत दूर कर दे।

संध्या करते समय उपासक मनसापरिक्रमा के मंत्रों में छः बार इस मंत्र को दुहराता है-

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उसको आपके न्यायरूपी जबड़े के समर्पित करते हैं। इस प्रकार वेद ने कई स्थानों पर मनुष्यों को द्वेष से बचने की प्रेरणा दी है।

लोक-भाषा में ईर्ष्या-द्वेष और राग-द्वेष ये दो शब्दयुग्म चलते हैं। प्रश्न यह उठता है कि द्वेष क्या है?महर्षि पतञ्जलि ने

योगदर्शन में कहा है-

सुखानुशयी रागः। -यो० १/२/७

अर्थात् जिस वस्तु से मनुष्य को सुख की प्राप्ति हो, उसकी प्राप्ति की बार-बार इच्छा होने को राग कहते हैं।

महर्षि पतञ्जलि ने दूसरा सूत्र दिया है-

दुःखानुशयी द्वेषः। -यो० १/२/८

अर्थात् जिस वस्तु अथवा व्यक्ति से दुःख की प्राप्ति हो, उससे परे रहने की इच्छा का मन में होना द्वेष कहलाता है।

वैसे तो प्रत्येक मनोविकार से ऊँचा उठना कठिन है, परन्तु द्वेष से ऊँचा उठना तो बहुत ही कठिन है। इसके लिए मानसिक निर्मलता की बहुत आवश्यकता है। जो हमारी अर्थ-हानि और मान-हानि का कारण बने, उसे हम कोई हानि न पहुँचाएँ अथवा उसका अपमान न करें, यह बात तो जँचती है, परन्तु उससे परे रहने की इच्छा को भी मन में न रखें, यह क्या कम साधना की बात है?इस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए बहुत अधिक आत्मिक बल की आवश्यकता है।

संसार में दो मार्ग हैं- एक सामान्य मार्ग, दूसरा विशेष मार्ग। सामान्य मार्ग तो यही है कि जैसे को तैसा। विशेष मार्ग यह है कि बुरे व्यवहार का उत्तर अच्छे व्यवहार में दिया जाए। सामान्य व्यक्ति तो सामान्य मार्ग अपनाते हैं, परन्तु विशेष व्यक्ति विशेष मार्ग का सहारा लेते हैं। विशेष मार्ग तो यह है कि-

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल का फूल है, वा को है तिरशूल॥

अर्थात् जो तेरे लिए काँटा बोता है तू उसके लिए फूल बो, क्योंकि वह तेरा बोया हुआ फूल तेरे लिए तो फूल बनकर उगेगा और तेरे शत्रु के लिए त्रिशूल बनकर उगेगा।

महाभारतकार ने विशेष मार्ग की पुष्टि करते हुए कहा है-

अक्रोधेन जयेत्क्रोधम्साधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्॥

मनुष्य को चाहिए कि क्रोध को शान्ति से जीते, बुराई को अच्छाई से जीते, कंजूसी को दानशीलता से जीते और झूठ को सत्य से जीते। यदि हमने क्रोध को क्रोध से जीतना है और बुराई को बुराई से जीतना है, कंजूसी को कंजूसी से जीतना है और झूठ को झूठ से जीतना है तो हममें कोई विशेषता नहीं है।

सामान्यमार्ग की पुष्टि करते हुए फारसी के कवि ने कहा है-

बा बदाँ बद बाशी बा नेकाँ निको।
जाए गुल गुल बाशी जाए खार खार॥

तू बुरों का साथ बुरा हो जा और नेकों के साथ नेक हो जा। तू फूल की जगह फूल हो जा और काँटे की जगह काँटा हो जा।

कुछ उग्र व्यक्तियों ने कबीर के दोहे को इस प्रकार बदल दिया है। इस बदले हुए दोहे में प्रतिकार की भावना प्रबल दिखाई देती है-

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोय तू भाला।
वह मतवाला क्या याद करेगा, पडा किसी से पाला॥

अर्थात् जो तेरे लिए काँटा बोता है तू उसके लिए भाला बो दे। वह मतवाला क्या याद करेगा कि किसी के साथ पाला पड़ा है।

संसार में केवल दो मार्ग हैं। पहला तो जैसे को तैसा का मार्ग और दूसरा है दूसरे के बुरे व्यवहार का उत्तर अच्छे व्यवहार में देने का मार्ग।

परन्तु एक बात यहाँ विशेषरूप से ध्यान में रखने योग्य है। किसी के बुरे व्यवहार का उत्तर अच्छे व्यवहार में देने का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत व्यवहार से है। इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय, जातिगत, समाजगत और संस्थागत धर्म से नहीं। जहाँ तक राष्ट्रीय धर्म का सम्बन्ध है यदि शत्रु देश हमारे देश पर हमला कर दे तो उस समय उनके लिए काँटे की जगह फूल न बोकर भाला ही बोना पड़ेगा। यदि उनके काँटे की जगह भाला न बोया गया तो देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा जाएगा। देश की दासता के लम्बे समय में जो दुर्गति हुई, वही अब होगी। दासता का दुष्प्रभाव जाति के गौरव और

सम्मान पर पड़ता है। मातृशक्ति की मान-मर्यादा नष्ट होती है। संस्कृति, सभ्यता और भाषा का ह्रास होता है। राष्ट्रीय सम्पत्ति का शोषण होता है। दासता का लम्बा इतिहास इन सब बातों का साक्षी है, अतः राष्ट्रगत धर्म में काँटे की जगह फूल बोना व्यावहारिक नहीं है।

जहाँ तक सामाजिक व्यवस्था का सम्बन्ध है, समाज में अवांछनीय तत्त्वों को अवश्य दण्ड देना पड़ेगा। यदि ऐसे तत्वों को दण्ड न दिया गया तो समाज की व्यवस्था बिगड़ जाएगी, अतः चोरों, डाकुओं, व्यभिचारियों और अत्याचारियों को तो दण्डित करना ही पड़ेगा, अन्यथा क्षमाशीलता सामाजिक अव्यवस्था उत्पन्न करेगी। इसके लिए मनु महाराज ने कठोर दण्ड-व्यवस्था का विधान किया है-

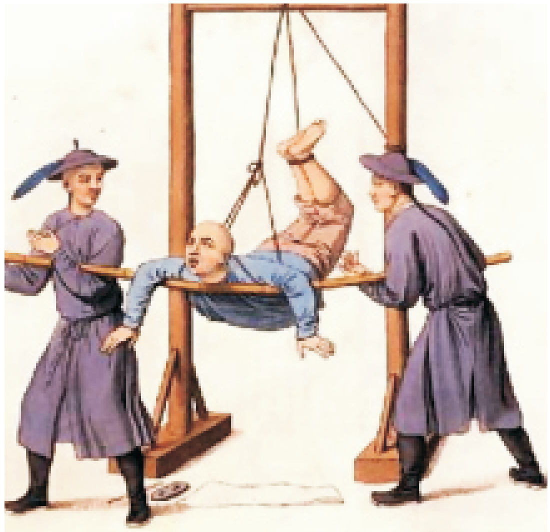

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ॥

-मनु० ७/१८

अर्थात् दण्ड प्रजा का शासनकर्ता, सब प्रजाओं का रक्षक, सोते हुए प्रजाजनों में जागता है, इसलिए बुद्धिजीवी लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति ॥

-मनु० ७/२५

जहाँ काले रंगवाला, रक्त-नेत्र और पापों को नष्ट करने वाला दण्ड विचरता है, वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त न होकर आनन्दित होती है, यदि दण्ड का चलानेवाला पक्षपातरहित हो।

अतः दण्ड-विधान ही समाज को व्यवस्थित रखता है। इस दण्ड व्यवस्था के अनुसार अपराधियों को दण्ड देना उचित है। अपराधियों को काँटे की जगह फूल बोना समाज के लिए अत्यन्त हानिकर सिद्ध होगा।

जहाँ तक संस्थागत धर्म की बात है, त्रुटि करनेवालों को दण्ड दिया जाएगा, क्योंकि इसके बिना संस्था की व्यवस्था नहीं चल सकती। दण्ड देते समय प्रबन्धक को सुधारवादी दृष्टिकोण अपने सम्मुख रखना चाहिए, प्रतिकारी नहीं बनना चाहिए। प्रतिकार की भावना मनुष्य के पतन का बहुत बड़ा कारण होती है, परन्तु सत्तारूढ़ होकर प्रतिकार की भावना से बचना केवल संस्कारी जीवों का ही काम है। सत्ता के मद में आकर अधिकारी प्रायः मानसिक सन्तुलन खोकर प्रतिकारी बन जाते हैं और व्यक्ति का सुधार न करके उससे बदला लेते हैं। यह अधिकारी वर्ग के पतन का लक्षण है।

क्षमा का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत और विशुद्ध व्यक्तिगत व्यवहार से है। इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय, सामाजिक और संस्थागत व्यवहार से नहीं है, यह ऊपर के विवेचन से स्पष्ट कर दिया गया है।

क्रमशः ....

- प्रो. रामविचार

वेद-सन्देश से साभार

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

१. धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
२. पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
३. मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
४. मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
५. सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०/- शीघ्र मंगवाएँ

देशद्रोहियों पर चर्चा क्यों?

आत्म निवेदन

कहा जाता है कि देश की न्यायपालिका का एक उसूल है कि चाहे दस दोषी छूट जाएँ परन्तु एक भी निर्दोष को दण्ड नहीं मिलना चाहिए। इसीलिए एक आरोपी को अनेक अवसर मिलते हैं। ट्रायल कोर्ट से उच्चतम न्यायालय के सफर के पश्चात् भी राष्ट्र के मुखिया के समक्ष अपनी बात कहने का एक अवसर दिया जाता है, जिसे दया याचिका कहा जाता है। मन में एक प्रश्न उभरता है कि सम्पूर्ण कानूनी प्रक्रिया में जब असंदिग्ध रूप से दोष सिद्ध हो जाता है तब फिर दया याचिका क्यों? दया याचिका के संदर्भ में तब और आशंका उत्पन्न हो जाती है जब पिछले वर्षों में दशाधिक दुर्दान्त क्रूर अपराधियों को क्षमा मिल गई हो। हाँ, निश्चित रूप से माननीय प्रणव मुखर्जी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने वर्षों से लंबित दया याचिकाओं पर कठोर निर्णय लेकर दुर्दान्त आतंकवादी व देशद्रोहियों को उनके अंजाम तक पहुँचाया है। इन दिनों एक चुटकुला प्रचारित हो रहा है- 'Ultimatily P.M. is in action साथ ही उसका विश्लेषण भी दिया जा रहा है- P.M. does not mean Prime Minister but it is PRANAB MUKHERJEE'। खैर हम आशा करते हैं कि माननीय राष्ट्रपति की यह दृढ़नीति अन्य अपराधियों को भी यथायोग्य दण्ड का रास्ता दिखायेगी। दया याचिका के औचित्य पर हमारा विचार यह है कि अनेक ऐसे काण्ड होते हैं जब अभियुक्त दोषसिद्ध तो है पर उसका कार्य मानवता के व्यापक हित में हो और Victim वास्तव में मनुष्य या समाज के लिए खतरा हो। कई वर्षों पूर्व एक फिल्म आयी थी। अंकुश । उसमें बताया कि किस प्रकार चार प्रभावशाली लोग एक लड़की का बलात्कार करते हैं और कानूनी प्रक्रिया में सुरंगें बना निर्दोष सिद्ध हो जाते हैं। तब चार नवयुवक इन नर पिशाचों को उनके सही अंजाम तक पहुँचाते हैं। कानून अपना कार्य करता है। योजनाबद्ध तरीके से की गई हत्याओं की, चाहे उनका उद्देश्य कुछ भी रहा हो, कानून इजाजत नहीं दे सकता। चारों युवकों को मृत्युदण्ड दिया जाता है। हमारा विचार है कि यहाँ दया याचिका की भूमिका हो सकती है। इसकी चर्चा भी हो सकती है, जनमत का पक्ष-विपक्ष भी हो सकता है। परन्तु देशद्रोहियों पर चर्चा क्यों? उन पर चर्चा नहीं उनके अंजाम पर इस प्रकार की चर्चा होनी चाहिए कि भविष्य में अन्यों को सबक मिले कि जो हमारे राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला करेगा उस राष्ट्रद्रोही का अंजाम इससे भी बुरा होगा। अफजल गुरु उस योजना का सूत्रधार था जिसमें देश की संसद पर हमला किया गया था। हमारे विचार में यह कुछ सुरक्षा प्रहरियों तथा कुछ सांसदों को मारने का प्रयास नहीं था वरन् आतंकवादियों के उस विचार तथा हौंसले का परिचायक था कि उनकी जद में कुछ भी सुरक्षित नहीं है। संसद पर हमला राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला था। संसद राष्ट्र की अस्मिता है, उसे जब चाहे हम तार तार कर सकते हैं, यह अफजल गुरु और उसके साथियों का संदेश था।

'गुरु' के परिवार को उसकी कब्र पर दुआ करने देना या न देना, मामले की संवेदनशीलता तथा मानवीय भावनाओं के

बीच में झूलता चर्चा का विषय हो सकता है परन्तु जिस Conviction तथा Sentence पर ट्रायल कोर्ट से सुप्रीम कोर्ट तक एकमत रहा हो, Exeuetion के पश्चात् मीडिया पर उसकी ट्रायल हो वह भी इस कारण से कि दोषी कश्मीरी मुसलमान था, जैसाकि एक मानवाधिकार नेत्री ने कहा, यह हमें हैरान कर देने वाली बात थी। एक टीवी चैनल पर एक माननीय पैनल के द्वारा जो चर्चा हो रही थी वह चकित कर देने वाली थी। उस पैनल में वे जस्टिस धींगरा भी शामिल थे जिन्होंने अफजल गुरु को फाँसी की सजा दी थी। चर्चा में अदालती कार्यवाही Fair न होने की शिकायत मानवाधिकार नेत्री कर रहीं थीं, जस्टिस धींगरा जवाब दे रहे थे। चैनल पर बहस तो सीमित समय में पूरी हो नहीं सकती परन्तु यह खतरनाक अधूरी बहस कुछ लोगों के दिमाग में यह शंका पैदा कर सकती है,

कि कहीं गुरु के साथ अन्याय तो नहीं हुआ? अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ठीक है परन्तु उसकी आड़ में उक्त प्रकार के कार्यक्रम निश्चित ही खतरनाक हैं।

अफजल गुरु को अपने को निर्दोष साबित करने के कितने ही अवसर मिले। संक्षेप में देखें। १८ दिसम्बर २००२ को ट्रायल कोर्ट में अफजल गुरु, शौकत हुसैन तथा गिलानी तीन लोगों को दोष सिद्ध पाया तथा फाँसी की सजा दी गई। शौकत हुसैन की पत्नी अफसाँ गुरु को छोड़ दिया गया ।

हाइकोर्ट में अपील करने पर माननीय उच्च न्यायालय ने अफजल गुरु को मृत्युदण्ड दिए जाने की सजा बहाल रखी पर गिलानी को दोषमुक्त कर दिया। पश्चात् माननीय उच्चतम न्यायालय ने भी अफजल गुरु की फाँसी की सजा बहाल रखी। अफजल ने पुनः रिव्यू पिटीशन दाखिल की। 'रिव्यू याचिका' भी रद्द कर दी। और अब माननीय राष्ट्रपति द्वारा अफजल की पत्नी तबस्सुम की दया याचिका खारिज की गई, फलस्वरूप दुर्दान्त आतंकवादी, देशद्रोही अपने सही अंजाम तक पहुँचा।

आपकी पूरी बात सुनकर सभी स्तरों पर आपको दोषी पाया गया तब भी फाँसी के पश्चात् मीडिया के किसी चैनल पर मानवाधिकार नेत्री द्वारा यह प्रस्तुति देने का प्रयास किया जाता है कि अफजल गुरु के साथ न्याय नहीं हुआ। उसकी ट्रायल Fair नहीं थी और एक पुस्तक में से कुछ पढ़कर प्रस्तुत करना कि अमुक अमुक गवाह का प्रति परीक्षण नहीं किया गया और फाँसी की सजा देने वाले माननीय न्यायाधीश धींगरा से उत्तर देने का अनुरोध करना एक ऐसा हतप्रभ कर देने वाला नजारा था जो कम से कम हमने पूर्व में नहीं देखा। मीडिया अगर इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत रख जायज मानता है तो फिर अफजल गुरु ही क्यों सभी दुर्दान्त अपराधियों को सजा दिए जाने के पश्चात् उसकी 'पब्लिक ट्रायल' कीजिए। यह प्रक्रिया हमें कहाँ ले जायेगी, इसके दुष्परिणाम क्या होंगे? ज्युडिशियरी के निर्णयों के प्रति प्रत्येक मामले में आशंका और संदेह के बीज आम जनता के मन में डाल देने के गंभीर परिणम होंगे। फिर दामिनी केस में भी अगर दुष्कर्मियों को सजा मिले तो क्या संबंधित न्यायाधीश को 'पब्लिक ट्रायल' के लिए तैयार रहना होगा? और अगर अफजल गुरु के केस विशेष को चुना गया है तो क्या केवल इसीलिए कि वह एक कश्मीरी मुसलमान है जैसाकि चर्चा के दौरान मानवाधिकार नेत्री के मुँह से निकल ही गया था।

स्मरण रखें अफजल हत्या का षड्यंत्र करने वाला मामूली अपराधी नहीं था। उसने देश की अस्मिता पर आक्रमण किया था। हमारा विचार है आक्रमणकारियों का उद्देश्य संसद पर हमला कर कुछ विशिष्ठ लोगों की हत्या करना कदापि नहीं था वरन् आम भारतीय को यह संदेश देना था कि तुम्हारे देश की संसद भी हमारे निशाने से नहीं बच सकती और इस प्रकार आमजन के मन में देश की कानून व्यवस्था के प्रति अविश्वास पैदा कर एक भयानक स्थिति को जन्म देना था।

ऐसे दुर्दान्त अराधी के संदर्भ में आश्चर्यजनक पब्लिक ट्रायल का आयोजन करना कदापि उचित नहीं। क्या मानवाधिकार के स्वयंभू नेताओं को इनके क्रूर कारनामों के शिकार, उनके परिवारीजन याद नहीं आते? उनका क्या कसूर था? **इसलिए देशद्राहियों के बारे में चर्चा हो तो उनके दुष्कृत्यों की हो, उनके अंजाम की हो। और इस प्रकार से हो कि फिर कोई अफजल गुरु के रास्ते पर चलने की सोचे भी नहीं।**

– अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३९८३६

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जाएगा।

वैदिक वर्ण व्यवस्था की वर्तमान में प्रासंगिकता

समाज मनुष्यों का बड़ा समूह होता है। व्यक्ति को अपने निजी कार्यों को दिन प्रतिदिन करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता स्वस्थ रहते हुए नहीं पड़ती। वह अपने दैनिक काम जैसे शौच स्नानादि स्वयं ही कर लेता है।

यहाँ तक कि यदि वह अविवाहित है या परिवार रहित है तो भोजन बनाना और मार्केट से अपनी आवश्यकता की वस्तुओं

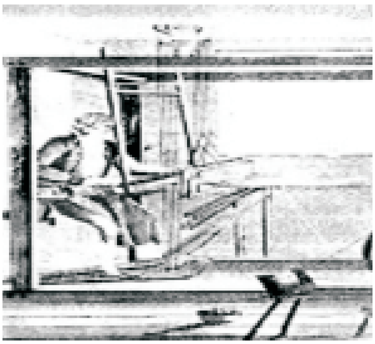

को खरीदकर लाने का काम भी स्वयं ही कर लेता है। किन्तु इससे आगे उसे परिवार या अन्य व्यक्तियों की आवश्यकता अपने जीवन निर्वाह के लिए पड़ती है। कुछ सीमा तक यदि उसका जीवन निर्वाह बिना परिवार के हो भी जाए तो भी जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुएँ वह स्वयं अकेला नहीं बना सकता। एक दो वस्तु बना भी ले तो भी सभी वस्तुओं का निर्माण अपने उपयोग के लिए वह अकेला नहीं कर सकता। इसके लिए उसे दूसरे बहुत से व्यक्तियों पर निर्भर करना पड़ता है। मकान बनाना, वस्त्र बनाना, अन्न उत्पन्न करना, पशुपालन करना, औषध-निर्माण, चिकित्सा आदि जीवन की मौलिक और आधारभूत वस्तुओं का भी निर्माण वह स्वयं अकेला नहीं कर सकता। ज्ञान उपार्जन के साधन, तकनीकी वस्तुएँ, यन्त्रकला, ज्ञान और विज्ञान तथा शत्रुओं से रक्षा की बातें तो अलग रहीं। वह तो बहुत ऊँची स्थिति में जीवन बिताने की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनिवार्य साधन हैं। इन्हीं सब आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अन्य

दूसरे बहुत से व्यक्तियों पर निर्भर रहना पड़ता है जो भिन्न भिन्न स्थान में इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने का काम एक दूसरे के लिए करते हैं। इन्हीं सब व्यक्तियों को मिलाकर समाज बनता है और समाज के भिन्न भिन्न व्यक्तियों की जीवन निर्वाह की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो अनेक व्यक्ति अलग अलग कार्य करते हैं उन कार्यों को करने के लिए व्यक्ति जो अपने जीवन की किशोर या यौवन अवस्था में जो कार्य करने का चुनाव करता है या उसे जो कार्य करना पड़ता है उस कार्य के चुनाव को वर्ण कहते हैं। तथा भिन्न भिन्न कार्यों का चुनाव या वर्ण को एक नियम या व्यवस्था में बाँधने को वर्ण व्यवस्था कहते हैं।

वेद विश्व का सब से पुराना ग्रन्थ है और वैदिककालीन समाज भी इसलिए विश्व भर में प्राचीनतम समाज है। वैदिककालीन समाज में मनुष्य की जो मौलिक तथा उच्चतर आवश्यकताएँ जो भी थीं या तो ज्ञानोपार्जन और शिक्षा की थीं या दूसरी समाज राष्ट्र या अपने देश की अंदर और बाहर के शत्रुओं से रक्षा करने की थी या तीसरे अर्थव्यवस्था को बनाये रखने के लिए कृषि, पशुपालन और व्यापार की थी या चौथे पूरे समाज की अन्य विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हाथ से काम (unskilled work) करने वाले व्यक्तियों की थी। इन्हीं चार प्रकार के कार्यों को वैदिक काल में चार वर्णों में बाँटा गया था जिन्हें वेद में चार वर्ण कहा गया है और इन चार प्रकार के कार्यकलाप को करने वाले चार वर्ण के लोगों को क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के नाम से पुकारा गया है। वेद पूरे समाज को एक शरीर के रूप में समझता और उपस्थित करता है। सर्वांगीण शरीर में मुख्यतः चार अंग हैं जिनका मुख्य कार्य भी चार ही प्रकार का होता है। एक सिर, मस्तिष्क या मुख, दूसरा बाहु या भुजायें, तीसरा उदर और चौथा पैर । मुख या मस्तिष्क शरीर में ज्ञान के आदान-प्रदान का काम करता है, बाहु या भुजाऐं शरीर की रक्षा का काम करती हैं, उदर सारे शरीर के लिए भोजन लेने और शरीर के विभिन्न अंगों की आवश्यकता के अनुसार उस भोजन के सार को सारे शरीर में बिना किसी भेदभाव के वितरण करने का काम करता है और पैर सारे शरीर को इधर उधर लाने ले जाने या श्रम करने का काम करते हैं। शरीर के इन अंगों में कोई ऊँच नीच का भेदभाव नहीं है अपितु इन अंगों के काम करने के सामर्थ्य के अनुसार ये अंग अपना- अपना काम स्वयं करते हैं। इसी प्रकार समाज भी एक सर्वांगीण शरीर के रूप में है और समाज में भी प्रमुख रूप से यही चार प्रकार के

कार्यकलाप चलते हैं। इनमें ज्ञान के आदान-प्रदान का काम करने वाले वर्ण को ब्राह्मण, समाज और राष्ट्र की रक्षा करने वाले को क्षत्रिय, कृषि, पशुपालन और व्यापार आदि अर्थव्यवस्था संबंधी काम करने वाले को वैश्य और समाज की अन्य सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्त्यर्थ काम करने वाले मानववर्ण को शूद्र वर्ण से कहा गया है। समाज की इसी वर्ण व्यवस्था को ऋग्वेद के निम्नलिखित प्रसिद्ध मंत्र में यूँ निरूपित किया है:-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

ऋग्।। १०.९०.१२।।

इसका भावार्थ हमने ऊपर लिख दिया, पुनः पिष्टपेषण करने की आवश्यकता नहीं है।

वैदिक काल की समूची समाज व्यवस्था, शासन व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था तथा सभी प्रकार की व्यवस्थाओं का समग्र निरूपण करने वाला प्रामाणिक ग्रन्थ मनुस्मृति माना जाता है। मनुस्मृति में इन चारों वर्णों के कार्य विभाजन को निरूपित किया है। वह निम्न प्रकार से है। ब्राह्मण वर्ण के कार्य का निरूपण निम्न श्लोक में मनुस्मृति में है।

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानंप्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पमत्॥

।।मनु. १.८८।।

ब्राह्मणवर्ण का समाज में कार्य है- अध्ययन करना, अध्यापन करना, यज्ञ करना, यज्ञ करवाना,दान लेना और दान देना। यह ब्राह्मण वर्ण बुद्धिजीवी वर्ग कहा जा सकता है। क्षत्रिय वर्ण के कार्यों का निरूपण मनुस्मृति में निम्न श्लोक में है।

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याऽध्ययनमेव च।
विषमेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥

।। मनु. १.८९।।

क्षत्रिय वर्ण का कार्य विधान संक्षेप में यह है कि वह प्रजाओं, समाज या राष्ट्र की अन्दर और बाहर के सभी शत्रुओं से रक्षा करे, यज्ञ (धार्मिक अनुष्ठान) करे, अध्ययन (शिक्षा ग्रहण) करे और विषय-(भोगविलास) में आसक्त न हो ताकि शत्रु उसे अभिभूत न कर सके और वह रक्षा कार्य में सजग रहे। यह Martial Race कही जा सकती है।

वैश्यवर्ण का कार्य निम्न रूप में निरूपित है:-

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।

।।मनु. १.९०।।

वैश्यवर्ण के कार्य (Profession) हैं, पशुपालन, दान देना (Charity, donation)यज्ञ करना(धार्मिक अनुष्ठान), ययन करना (शिक्षा ग्रहण करना), वाणिज्य (व्यापार) ब्याज पर पैसा देना और कृषि कार्य करना। अब पशुपालन और कृषि कार्य वैश्य वर्ण न करके

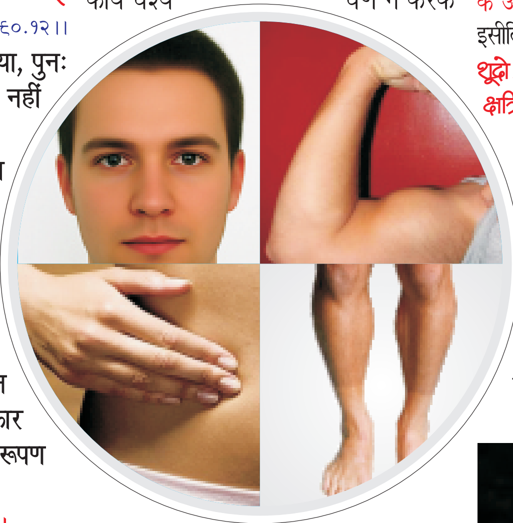

समाज का अन्य वर्ग जो कृषक वर्ग कहलाता है करता है। इसका कारण मध्यकालीन समाज में विशेषतः चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में शासन व्यवस्था और राज्य व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन रहा है। इस व्यवस्था में परिवर्तन का वर्णन कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित है। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि कौटिल्य-चाणक्य के समय देश की राजनीति-शासन व्यवस्था विशेषतः अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हुए थे। ब्याज पर पैसा देने का काम भी वैश्य वर्ण से छूट गया। विशेषतः देश की स्वतंत्रता के बाद यह कार्य अब बैंक करने लगे हैं जो सरकारी भी हैं और निजी भी। वैश्य वर्ण को व्यापारी वर्ग कहा जा सकता है।

शूद्र वर्ण के कार्यों का वर्णन मनुस्मृति के निम्न श्लोक में है:-

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥

।।मनु. १.९१।।

शूद्र वर्ण का काम है कि जो कार्य उपर्युक्त तीनों वर्णों के कहें हैं उन कार्यों में से किसी भी कार्य को करने में असमर्थ हैं तो वह उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त जो कार्य बच गये उनमें से कोई भी कार्य करके समाज की सेवा करके अपनी आजीविका कमाए। यहाँ यह ध्यातव्य है कि मनुस्मृति के आदिकाल में वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर थी इसीलिए मनुस्मृति में कहा गया है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥

मनु.।।१.१०।।

ब्राह्मण भी यदि ब्राह्मण वर्ण के गुण, कर्म और स्वभाव वाला नहीं है तो वह शूद्र वर्ण में गिना जायेगा और शूद्र वर्ण के यहाँ पैदा होने वाला व्यक्ति भी यदि ब्राह्मण के गुण कर्म और स्वभाव अपना लेता है तो वह ब्राह्मण वर्ण में गिना जायेगा।

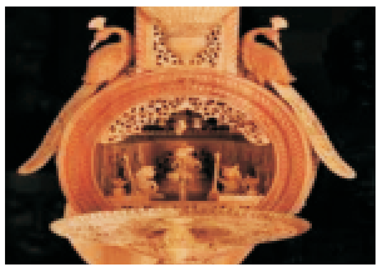

यह शूद्रवर्ण दस्तकारी (हस्तकला) और शिल्प के कार्य करता था। अतः यह श्रमिक वर्ग का ही था। हाथ के कामों में मकान बनाने वाला मिस्त्री, चुनाई करने वाला श्रमिक, लोहे का काम करने वाला लुहार, सोने चाँदी की घड़ाई, आभूषण बनाने वाला सुनार, मिट्टी आदि के घड़े बनाने वाला कुम्हार, जूता बनाने वाला चर्मकार, धोबी, नाई आदि गिने जा सकते हैं।।

यह भी यहाँ स्पष्टीकरण योग्य है कि वैद्य, डॉक्टर आदि ज्ञान या विद्याजन्य पेशा करने

से ब्राह्मण वर्ण में ही आते हैं। विमान विद्या और नौकाविद्या की चर्चा मनुस्मृति में है अतः ये निर्माण कार्य बुद्धि पर आधारित होने के कारण ब्राह्मण वर्ण के ही हैं। पाक विद्या भी ज्ञान से संबंधित होने के कारण, ब्राह्मण वर्ण की है किन्तु खाना बनाने में केवल शारीरिक श्रम करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण नहीं माना जा सकता, अब जो युगह्रास और पतन के कारण ऐसा माना जा रहा है। निष्कर्ष यह कि जो भी बुद्धि और ज्ञान की अपेक्षा रखने वाले कार्य हैं वे सब ब्राह्मण वर्ण के कहे जा सकते हैं किन्तु जो ज्ञान या बुद्धि की इतनी अपेक्षा नहीं रखते और उपर्युक्त क्षत्रिय या वैश्य के भी कार्य नहीं हैं वे शूद्र वर्ण के कार्य हैं। किसी भी प्रकार की साफ सफाई करने का काम बुद्धि सापेक्ष नहीं है तो वह शूद्र वर्ण का ही काम है किन्तु **वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार अलग-अलग प्रकार के काम करने वाला चाहे वह बुद्धिसापेक्ष हो और चाहे बुद्धिसापेक्ष न हो किसी भी ऊँच नीच की नजर से नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि समाज की संरचना एक शरीर की संरचना के समान है जिसके अंग भिन्न-भिन्न कार्य करते हुए भी ऊँच नीच की दृष्टि से नहीं देखे जाते और सभी अंग बराबर समान रूप से आवश्यक और महत्वपूर्ण होते हैं।**

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वेद के अनुसार शिक्षा का अधिकार अन्य वर्णों की भाँति शूद्र वर्ण को भी बराबर है। वेद का मंत्र स्पष्ट हैः-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जानेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्या च स्वाय चारणाय च।

– यजु. २६.२

यजुर्वेद के इस मंत्र के अनुसार वेदादि के अध्ययन और शिक्षा का अधिकार सभी जनों को है, चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, शूद्र हो, वैश्य हो तथा चाहे अन्य भृत्य हो,स्त्री हो या अतिशूद्र हो। सबको शिक्षा का अधिकार समान रूप से बराबर है। हाँ, यदि कोई अपने बुद्धि के सामर्थ्य के अभाव के कारण शिक्षा (वेदादि की) ग्रहण करने में असमर्थ हो तो वह स्वतः ही शूद्र (अनपढ़) रह जायेगा और वह ब्राह्मण वर्ण का भी हो सकता है क्योंकि वह वैदिक वर्ण व्यवस्था जन्मना न होकर कर्मणा थी।

यह वर्ण व्यवस्था महिलाओं पर भी बराबर लागू थी। यह तथ्य वेद में यूँ स्पष्ट किया है :-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।

वैदिक काल में कन्याएँ शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरुकुलों में प्रवेश करती थीं। ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करती थीं और पूर्ण युवावस्था में युवा पति से विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती थीं और अपने वर्ण के अनुसार कार्य करती थीं।

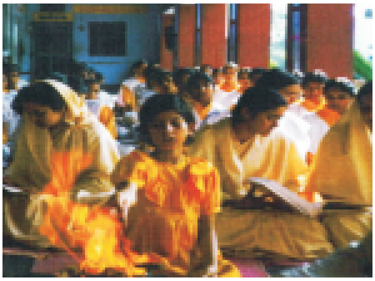

मनु को यह युगधर्म में अन्तर और काल परिवर्तन के साथ-साथ कार्यों में परिवर्तन का भली भाँति ज्ञान था। ज्यों-ज्यों काल आगे बढ़ेगा समाज में भी वृद्धि, विकास और परिवर्तन अनिवार्य है। जिसके कारण लोगों के पेशे-काम-धन्धे बढ़ेंगे, बदलेंगे और उनमें वृद्धि विकास तथा परिवर्तन होगा, यह तथ्य मनु को मालूम था। इसका स्पष्ट वर्णन मनु ने निम्न श्लोक में किया हैः-

अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरेऽपरे।
अन्ये कलियुगे नृणां युगह्रासानुरूपतः॥

मनु. १.८५॥

युगह्रास या काल परिवर्तन के साथ साथ लोगों के पेशे कार्य कलाप और वर्ण कृतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में बदलेंगे या घटे बढ़ेंगे। यह तथ्य अब स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है।

इसी तथ्य को मनु ने अगले श्लोक में स्पष्ट किया हैः-

ब्राह्मं कृत युग प्रोक्तं त्रेता तु क्षत्रियं युगम्।
वैश्यो द्वापर मित्याहुः शूद्रः कलियुग स्मृतः॥

मनु.१.८७॥

यद्यपि इस श्लोक की प्रामाणिकता संदिग्ध है किन्तु इसमें कहा गया है कृत-युग में बुद्धि और ज्ञान का प्राबल्य रहेगा, त्रेता में क्षात्रधर्म का प्रभाव रहेगा। द्वापर में व्यापार और आर्थिक गतिविधियाँ हावी रहेंगी और कलियुग में श्रमिक कार्यों और श्रमिक कर्मियों का बोलबाला रहेगा। मनु के इस वचन में कुछ तो सच्चाई लगती है। खैर।

वर्तमान में प्रासंगिकता

वैदिक वर्ण व्यवस्था का यह संक्षेप में हमने विवरण दिया है। अब वर्तमान में इसकी क्या प्रासंगिकता है यह भी हम संक्षेप में लिखेंगे।

कार्ल मार्क्स १९वीं शताब्दी में एक महान् क्रान्तिकारी युगपुरुष हुवे। उन्होंने शोषणवाद के खिलाफ साम्यवाद का नारा दिया। उनके उद्घोष पर सारे विश्वभर में युगान्तरकारी क्रान्तियाँ हुईं। अनेक देशों में राजाओं के तख्ते पलट गए। रूस, चीन, जर्मनी में महान् रक्तपात हुआ। आर्थिक शोषण समाप्त हुआ और साम्यवादी समाज अर्थव्यवस्था और शासन व्यवस्था स्थापित हुई। भारतवर्ष जैसे समाजवादी देश भी उसके प्रभाव से नहीं बच पाए। उन्होंने (classless society) वर्गहीन समाज का प्रतिपादन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Das Capital) में किया। समाज में सब जाति-पाति आर्थिक भेदभाव और मानव निर्मित वर्गों का ह्रास होने लगा। किन्तु कार्मिक वर्ग Professional Classes उन्होंने भी समाज में स्वीकारी। समाज की मूलभूत आवश्यकताओं को उन्होंने देखा, अनुभव किया और स्वीकार किया। अतः उन्होंने भी कार्यों के आधार पर समाज को चार वर्गों में बाँटा। एक बुद्धिजीवी वर्ग, दूसरा सैनिक वर्ग, तीसरा आर्थिक या व्यापारी का वर्ग, चौथा श्रमिक वर्ग। वर्तमान में सभी देशों के समाज और राष्ट्र इन्हीं कार्मिक वर्गों के आधार पर चल रहे हैं क्योंकि ये कार्मिक वर्ग समाज की मूलभूत आवश्यकताओं पर आधारित हैं। इन चार प्रकार के पेशों के बिना कोई भी समाज या राष्ट्र कभी नहीं चल सकता। और इन्हीं मूलभूत आवश्यकताओं पर वैदिक वर्ण व्यवस्था आधारित है। अतः यह वैदिक वर्ण व्यवस्था वर्तमान में भी अनिवार्यतः प्रासंगिक है और हमेशा रहेगी। किन्तु इसमें जो निहित स्वार्थी लोगों के या अन्य कारणों से विकार या दोष आये उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

ए-३/११,पश्चिम विहार
नई दिल्ली ११००६३

महर्षि दयानन्द का सार्वभौमवाद

-आचार्य रामवीर शास्त्री 'अरुणेश'

महाभारत काल के बाद हमारा महान् भव्य भारत उत्तरोत्तर पतन के गहन गर्त में गिरता चला गया था। इसका प्रधान कारण परस्पर घोर ईर्ष्या द्वेष था। इसीलिए भारत विदेशी दासता में पतन की पराकाष्ठा पर पहुँच गया। उसी महाकाल रात्रि में युग प्रवर्त्तक भारत भाग्य विधाता महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने भारत के प्राचीनतम महत्तम सार्वभौम वैदिक गौरव गरिमा का ब्रह्माण्डव्यापी महाशंखनाद किया, जिसे बाद में स्वामी विवेकानन्द ने सम्पूर्ण विश्व में गुंजायमान किया।

विदेशी दासता में चीखते कराहते भारत भूमि में एक ऐसे युगावतार का प्रादुर्भाव हुआ, जो उस घटाटोप अंधकार में महामार्त्तण्ड बन कर दमदमा उठा। सारा विश्व आलोकित हो उठा। जिसके सामने सारे टिमटिमाते तारे लुप्त होना प्रारम्भ हो गए। जिसके दिगन्त व्यापी शंखनाद से सारे निशाचर तथा ढोंगी पाखण्डी भाग खड़े हुए। उस नर-नाहर ने उन सभी, बुराइयों कुरीतियों, कुसंस्कारों को जड़-मूल से उखाड़ फेंका जिनके कारण हमारा गौरवशाली भव्य भारत रसातल में चला गया था। उन्होंने संत्रस्त पीड़ित भारतीय मानवता का उद्धार कर अपने खोए अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए ललकारा। १८५७ की क्रांति उसी महामानव की प्रेरणा का पावन परिणाम थी जिसके विफल हो जाने पर भी महर्षि किंचित भी निराश नहीं हुए और द्वितीय महासंग्राम के लिए पुनः देश को ललकारा। जब आशा की कोई किरण कहीं दिखाई नहीं दी तो अंत में उन्होंने १८७५ में मुम्बई आर्य समाज की दीपशिखा प्रज्ज्वलित की जिसे श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, मानवेन्द्र नाथ राय, भीखाजी कामा, राजा महेन्द्र प्रताप, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाक उल्लाखाँ, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, अरविन्द घोष आदि वीरों ने विश्वव्यापी बनाया। इसी के परिणामस्वरूप स्वाधीनता संग्राम की दीपशिखा दावानल बनकर कालान्तर में प्रचण्डतम हो गयी। जिसे नेता जी सुभाष ने शिखर पर पहुँचा दिया।

एक दिन महर्षि का यह मिशन अपना परम लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेगा। जब संत्रस्त पीड़ित विश्वमानवता के उद्धार का महास्वप्न पूर्णता को प्राप्त करेगा । सम्पूर्ण सच्ची विश्वशांति की स्थापना भी होगी। जब सार्वभौम रामराज्य की स्थापना हो जायेगी तभी सच्ची सुख शांति समृद्धि सम्पूर्ण सुरक्षा, सुव्यवस्था सुनिश्चित होगी तभी मानवता का मंगल सुप्रभात फूटेगा।

निःसंदेह राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत थे तथापि उनमें और तत्कालीन सभी प्रबुद्ध भारतीयों में हिन्दू धर्म के प्रति घोर आत्महीनता की ग्रन्थि प्रगाढ़ थी। इसीलिए वे ईसाई धर्म के प्रति अधिक आकर्षित थे। यदि महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव नहीं हुआ होता तो आज सम्पूर्ण भारत ईसाई हो गया होता। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, राम कृष्ण, परशुराम, वशिष्ठ, व्यास का नाम लेने वाला भी कोई नहीं होता। युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द संसार के प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने ब्रह्माण्डव्यापी शंखनाद कर घोषणा की कि संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान वेदों में विद्यमान है। सर्वशक्तिमान प्रभु हमारी आत्मा में विराजमान है। वैदिक धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार-स्वदेश प्रेम एवं भारत महिमा का गुणगान, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार-स्वदेशी का प्रचार उनके जीवन का मूल मंत्र था। वे धार्मिक -सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रवर्तक एवं राष्ट्रव्यापी जागरण का शंखनाद करने वाले राष्ट्र महानायक थे।

किसी भी विषय में विदेशियों के सामने सर झुकाना उन्हें स्वीकार नहीं था। भारत में विगत एक हजार वर्षों में महर्षि एक ऐसे महामानव हुए जिन्होंने भारत की सभी समस्याओं पर गम्भीर गहन अध्ययन-चिन्तन-मनन कर उसके पतन के सभी कारणों का सूक्ष्म विवेचन किया और उन्हें उखाड़ फेंकने में अपने प्राणों की बाजी लगा दी। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि लिखते

हैं – 'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है।' 'आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।' स्वामी जी का मानना था कि आदि सृष्टि से पाँच हजार वर्ष पूर्व तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था।

अपने गुरु के एक आदेश पर उन्होंने प्रभुभक्ति व समाधि को त्यागकर अपना सम्पूर्ण जीवन इस राष्ट्र को जगाने में ही होम कर दिया । सोलह वैदिक सुसंस्कारों से सुसम्पन्न एक प्रचण्ड शक्तिशाली बेहतर वैदिक भव्य भारत निर्माण की आधारशिला महर्षि ने ही रखी थी जिसकी बलिवेदी पर उन्होंने अपने प्यारे प्राणों की बलि चढ़ा दी। बेहतर वैदिक भव्य भारत निर्माण के लिए स्वतन्त्रता परमावश्यक थी। महर्षि ने ही महामेधावी प्रतिभीशाली बालक श्याम जी कृष्ण वर्मा को स्वतंत्रता की अलख जगाने के लिए इंग्लैण्ड भेजा। जिसने भारतीय क्रान्तिवीरों के आन्दोलन को विश्वव्यापी बनाया और आजीवन आजादी की अलख जगाए रखी । स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को कभी मंद नहीं पड़ने दिया। उन्हीं के शिष्य लाला हरदयाल ने अमरीका में गदर पार्टी की स्थापना कर दो करोड़ हथियार खरीद कर कामातुमारी जहाज से स्वतंत्रता संग्राम के लिए भारत भेजा। महर्षि की घोर तपस्या साधना से ही भारत स्वतंत्र हुआ। संत्रस्त पीड़ित विश्व मानवता के उद्धार के लिए सार्वभौम राम राज्य की स्थापना परमावश्यक है। तभी केवल तभी, सच्ची विश्वशांति एवं संपूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

आज संसार के समक्ष मात्र दो ही विकल्प शेष हैः– 'सार्वभौमवाद या सर्वनाश'

११० जीएच ६ सेक्टर ५ मानसादेवी नगर पंचकूला,
चण्डीगढ़ –१३४११४
फोन– ०१७२–२५५६४९९

❑❑❑

दीनदयाल गुप्त, न्यासी

श्रीमद्दयानन्द जयन्ती एवं बोधरात्रि व होलिकोत्सव के पावन अवसर पर विश्वभर के सभी आर्यजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

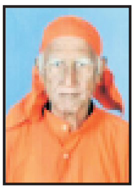
स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

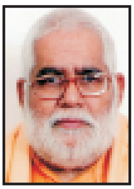
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

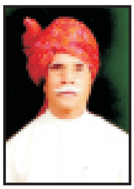
श्रीयुत् राव हरिचन्द्र
नागपुर

श्री लोकेश चन्द्र टाक
बैंगलोर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्रीमती गायत्री पंवार
जयपुर

श्री प्रधान जी
मध्यभारतीय आ. प्र. सभा

श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव
कोटा

श्री भारतभूषण गुप्ता
नोएडा

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

डॉ. मोतीलाल शर्मा
जयपुर

श्री विजय तायलिया
उदयपुर

श्री वीरेन्द्र मित्तल
उदयपुर

श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक
बैंगलुरू

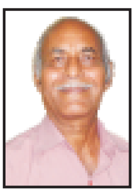
डॉ. अमृतलाल तापड़िया
उदयपुर

श्री विकास गुप्ता
नोएडा

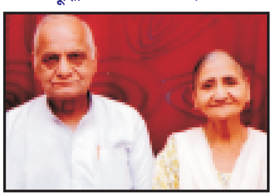
श्री रामप्रकाश छाबड़ा एवं श्रीमती कलावती छाबड़ा
दिल्ली

आर्य समाज हिरण मगरी से.४, उदयपुर
आर्य समाज हिरण मगरी
उदयपुर

डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा
श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा
श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

जन्मतिथि पर श्रद्धांजलि आलेख

भारतीय संस्कृति के पुनर्संस्थापक

स्वामी दयानन्द

विश्ववंदित भारतवर्ष का हर दिन त्योहार होता है। फिर भी कुछ दिवस अति महत्त्वाधायी होते हैं। इसमें ऐसे ही दो अनुपम दिन हैं- महाशिवरात्रि तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव। महाशिवरात्रि वह शुभ दिन है जब बालक 'मूलशंकर' सत्यान्वेषण की डगर पकड़कर ''दयानन्द'' सा सन्त बना।

स्वामी दयानन्द १८२४ ई. में फाल्गुन माह की दशमी (कृष्णपक्ष) को गुजरात के जमीदार कर्षण जी तिवारी के आँगन में अवतरित हुए। शिवभक्त पिता के प्रभाव से इस मेधावी बालक के हृदय पटल पर भारतीय संस्कृति व धर्म के प्रति गहरी निष्ठा स्थापित हो गई। देववाणी (संस्कृत) आपने प्रारम्भ से ही पढ़ी।

एक बार शिवरात्रि को परिजनों के साथ बालक मूलशंकर ने भी व्रत रखा। रात को शिवालय में जागरण चल रहा था। मध्यरात्रि पश्चात् और सबको नींद की झपकी लगी, पर ये अडिग ध्यान लगाए बैठे थे। तभी इन्होंने देखा कि एक चूहा शिवलिंग पर चढ़ाई मिठाई व अक्षत खा रहा है। ये चकित रह गए। इनका मोहभंग हुआ मूर्तिपूजा से।

फिर इनकी षोडशी भगिनि तथा अति अनुरागी चाचा का

आकस्मिक देहावसान हो गया। इससे ये वैरागी होकर मृत्यु के रहस्यान्वेषण में प्रवृत्त हुए। इससे घबराकर इनके पिताश्री ने इनको विवाह-बंधन में बाँधना चाहा। लेकिन आप घर से निकल गए। सत्य-तत्त्व की खोज में दयानन्द तीर्थाटन को चल पड़े। वे अहमदाबाद और फिर बड़ौदा पहुँचे।

उन्होंने चैतन्य मठ के ब्रह्मानन्द स्वामी से वेदान्त दर्शन, शिवानन्द गिरि से योग क्रियाएँ, पूर्णानन्द स्वामी से संन्यासाश्रम तथा योगानन्द से योगाभ्यास सीखा। फिर ये सत्गुरु के अन्वेषण में तल्लीन हुए। दक्षिण-पश्चिम व उत्तर भारत के तीर्थों का भ्रमण भी किया। अन्ततोगत्वा मथुरा में इन्हें सत्गुरु ''विरजानन्द'' मिल गए। प्रज्ञाचक्षु दण्डी जी वेद व व्याकरण विशारद थे। इनसे दयानन्द पढ़ने लगे।

आपने गुरुजी की सेवा भी खूब की। अनेक बार क्रोधवश विरजानन्द जी इन्हें पीट देते। तब ये कहते- ''लाइए आपके हाथ दबा दूँ, मुझे मारने से ये दुःख रहे होंगे।'' विद्या प्राप्ति के पश्चात् ये कुछ लौंग गुरु दक्षिणा में देने लगे

तो गुरुदेव के शब्द थे- ''तुम संसार को वेदज्ञान दो, वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना से भारत ही नहीं विश्व का कल्याण होगा। यही मेरी गुरु दक्षिणा है।'' दयानन्द ने गुरुचरणों में शीश नवाया और लग गए वैदिक धर्म के प्रचार में।

आपने इस पावन संस्कृति में नए प्राण फूँके। रूढ़िवाद, महन्तों, मठाधीशों में उलझे समाज को नई दिशा दी। १८६७ ई. में हरिद्वार के महाकुम्भ में अपनी प्रख्यात् ''पाखण्ड खण्डनी''

पताका फहराकर आर्यजाति के उत्थान का मंत्र सुनाया था। मूर्त्तिपूजा, बहुदेववाद आदि को भारतीय धर्म के विरुद्ध

घोषित करते हुए दयानन्द ने कुप्रथाओं का खण्डन किया। जातिगत ऊँच-नीच, बालविवाह इत्यादि का कड़ा विरोध करते हुए शिक्षा प्रसार, नारी उद्धार जैसी बातों को प्रबल समर्थन दिया। सतीप्रथा को आपने अवैध ठहराया।

एक बार काशी में दयानन्द ने कीचड़ में धँसी गाड़ी के बैलों पर गाड़ीवान द्वारा चाबुक बरसाते देखा। दयार्द्र हो ये महामना कीचड़ में घुस गए और धक्का देकर बाहर निकाली वह गाड़ी। एक राजा ने इनसे प्रस्ताव किया- ''स्वामीजी! आप मूर्त्तिपूजा का खण्डन छोड़कर राज्य के विशाल मन्दिर के महन्त बन जायँ, खरबों की जायदाद आपकी हो जाएगी।'' आपने सक्रोध कहा- ''तुम्हें राजा होने का अभिमान है तो मुझे फकीर होने का। सच्ची राष्ट्रीय चेतना का संस्थापन मेरे जीवन का ध्येय है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।'' एक समय कविराज श्यामलदास ने इनसे कहा- ''आपका स्मारक बनाने की इच्छा है ताकि आपके स्वर्गारोहणोपरान्त आपके अनगिनत अनुरागी दर्शन कर लिया करें।'' इस पर आपश्री ने दो टूक प्रत्युत्तर

दिया था- ''नहीं, मरणोपरान्त मेरी राख खेतों में बिखेर देना, इससे इस पुण्यधरा पर हम सदा संग-संग ही रहेंगे।'' स्वामी दयानन्द उत्कृष्ट साहित्य साधक भी थे। इन्होंने मातृभाषा हिन्दी में वेदों के भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, वेदांग प्रकाश, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि प्रभृत अनेक कृतियों का प्रणयन किया। हिन्दी को सगर्व ''आर्यभाषा'' मानने वाले ये वेदों के मर्मज्ञ थे।

इस महान् राष्ट्रधर्मी ने १८७५ ई. में मुम्बई में ''आर्यसमाज'' की स्थापना की। आप नूतन-पुरातन के मध्य सेतुवत् हुए। आपने हमें सदियों से बिखरे वैदिक धर्म के उन्नत मार्ग पर लाने का सबल प्रयास किया। भारतीय इतिहास में स्वामी जी को वही स्थान प्राप्त है जो यूरोप में महान् सुधारक मार्टिनलूथर को। इनके अनुसार सम्बन्धों का आधार प्रेम, न्याय व धर्म होना चाहिए। काँगड़ी (हरिद्वार) का गुरुकुल दयानन्द के आदर्शों पर ही स्थापित किया गया।

राजा का जीवन स्वयं का नहीं, जनता जनार्दन का है- इस विचार से जोधपुर नरेश को वेश्या से मुक्ति दिलाई। इनकी इस अन्योक्ति कि- ''एक शेर कुतिया संग कैसे?'' से तिलमिलाई उस कुपथगामिनी ने षड्यन्त्र पूर्वक दूध में मिला दयानन्द को विष खिला दिया। इससे १८८३ ई. में अजमेर में स्वामी जी देहावसान हो गया। जोत परमजोत में विलीन हो गई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जीवन में प्रत्येक जरूरी क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया, जिसे हम भारतवासी कदापि नहीं भुला सकते। हमारा कर्तव्य है कि इस वीतरागी राष्ट्रीय संत के सुझाए पथ पर चलें, उनके अधूरे सपनों को पूर्ण करने में महती भूमिका निभायें।

-बनवारी पारीक 'नवल'
फतहनगर

फार्म-IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः- मासिक
३. मुद्रक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते। -लागू नहीं

मैं अशोक कुमार आर्य घोषण करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः- ०७.०३.२०१३
प्रकाशक के हस्ताक्षर

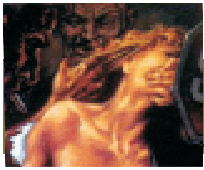

क्या हो इनका अंजाम?

"महिलाओं पर होने वाले आक्रमणों के प्रति आज देश में अभूतपूर्व गुस्सा है। दुष्कर्मियों को क्या सजा दी जाय, इस पर अनेक सुझाव आ रहे हैं। जस्टिस वर्मा समिति ने अपनी सिफारिशें दे दी हैं तथा वे सरकार द्वारा मान भी ली गयी हैं। परन्तु आम जनता की क्या प्रतिक्रिया है यह जानने का प्रयास प्रमुख अखबार दैनिक भास्कर ने किया। पाठकों के लाभार्थ ये प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत हैं। दैनिक भास्कर का आभार प्रकाशित करते हैं।" -संपादक

- बलात्कारियों को मिले मृत्युदंड, उससे कम कुछ नहीं!
- यौन शोषण, ईव टीजिंग पर हो ज़िंदगी भर का कारावास।
- आजकल १४-१५ साल के लड़के भी ईव टीजिंग करने में नहीं हिचकते। हमें अपने बच्चों को सही संस्कार और परवरिश देनी होगी। उन्हें भी सभ्य और ज़िम्मेदार बनाना होगा, अन्यथा बेहतर कल का सपना साकार नहीं होगा।
- फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलें ऐसे मामले।
- रेपिस्ट को नपुंसक बना दो, उनका अंग-भंग कर दो।
- सिखाएँ आत्मरक्षा के गुर व तकनीकें।
- पुलिस थानों में कम अपराध दर्ज़ होने पर नहीं, ज्यादा मामले सुलझाने पर मिले पदोन्नति।
- अदालत में बहस, वकील के तरह-तरह के सवाल पीड़िता को केस वापस लेने पर मजबूर कर देते हैं। इसलिए दुष्कर्मों के मामलों में फ़ैसला मेडिकल जाँच के आधार पर हो। जाँच कब-कहाँ होगी, कौन करेगा ये बाते गुप्त रखी जाएँ, ताकि निष्पक्ष रिपोर्ट मिल सके।

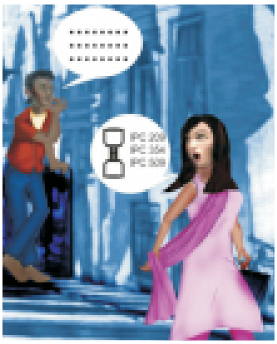

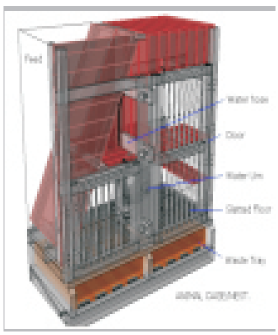

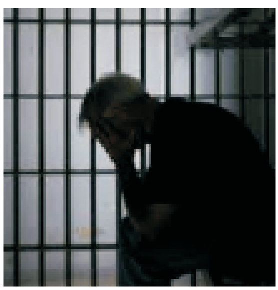

- बस चालकों और कंडक्टरों को सिखाएँ सभ्यता। महिलाओं को अपने लिए आरक्षित सीटों पर बैठने का मिले वास्तविक हक़।
- कार्यस्थलों पर महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा के लिए बनें व्यापक क़ायदे। देर रात तक ड्यूटी करने वाली महिलाओं को सुरक्षित घर वापसी के लिए मिले भरोसेमंद सुविधा।
- बलात्कारी को नपुंसक बनाकर चिड़ियाघर जैसी जेल में रखें, जहाँ उसे रोज़ घृणा भरी नज़रों का सामना करना पड़े और अन्य लोग ऐसे कृत्य करने से काँपें।
- सज़ा की सुनवाई तक दोषियों को शारीरिक व श्रमसाध्य दण्ड दिया जाए, ताकि जीवित रहने का बोझ ये खुद उठाएँ, सरकार या आम जनता नहीं।

बेहतरी की उम्मीद के लिए सिस्टम की डोर काबिल हाथों में होना ज़रूरी है। वोट देने से पहले उम्मीदवार की शिक्षा-दीक्षा और पुलिस रिकॉर्ड पर भी ग़ौर करें, ताकि ग़लत लोग गद्दी पाकर अँधेरा फैलाने में सहायक न बन सकें।

महिलाओं के विरुद्ध अपराध में ज़मानत न मिले और ६० दिनों के अन्दर फ़ैसला सुना दिया जाए।
रेपिस्ट का चेहरा, नाम, मोहल्ला व शहर सार्वजनिक कर दें, ताकि उसे हमेशा ख़ामियाज़ा भुगतना पड़े।

- पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ की तरह महिलाओं की सुरक्षा के लिए 'विमेन प्रोटेक्शन फोर्स' का भी गठन होना चाहिए।
- परिजनों और समाज को पीड़ित स्त्री के साथ अपमान और उपेक्षा के बजाय प्यार तथा सहानुभूति से पेश आना चाहिए।

आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर यौन अपराधियों के शरीर में 'ट्रैकर' फिट कर दिए जाएँ, ताकि सज़ा पूरी करने के बाद भी उनकी हर गतिविधि की जानकारी रहे और वे पीड़ित परिवार को परेशान न कर सकें।

- लड़कियों पर फ़िकरे कसने और छेड़छाड़ करने वालों को सज़ा जरूर मिलनी चाहिए, ताकि वे और बड़े अपराधों के बारे में सोच भी न पाएँ।
- पुलिस बने मानवीय, सीखे नारी का सम्मान।

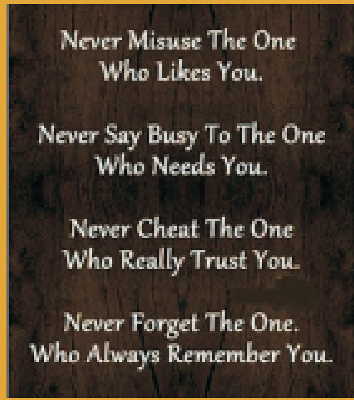

- दुष्कर्मियों के माथे पर एक ख़ास चिँ अंकित कर दिया जाए, ताकि आईने में शक्ल देखने से समाज का सामना करने तक, हर क्षण उन्हें पछतावा हो।
- रेपिस्ट को जनता के हवाले कर दें। इससे ऐसी मानसिकता वाले तमाम लोगों को सबक़ मिलेगा और वे छेड़छाड़ से पहले भी हज़ार बार सोचेंगे।

- लड़कियों को बाहर सम्भलकर रहने की हिदायत देने के साथ-साथ लड़कों को भी नारियों की इज़्ज़त करने की सीख ज़रूर दें।
- स्कूलों में अनिवार्य नैतिक शिक्षा देनी चाहिए, ख़ासतौर पर लड़कों को।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

भूल सुधार सत्यार्थ सौरभ जनवरी 2013 में प्रकाशित समाचारों में आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर से सम्बन्धित समाचार में इस आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द के शिष्य योगी पण्डित कालूराम के द्वारा की गई ऐसा पढ़ने का श्रम करें।

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

बाल वाटिका

हृदय बदलें

आदमी आशा, आकांक्षा, इच्छा, लोभ, भय, काम इनसे इतना ज्यादा पीड़ित है कि दृष्टिकोण सही बन नहीं पाता और दृष्टिकोण केवल कामचलाऊ या लोक-दिखाऊ बना रहता है। रूस के सम्राट पीटर ने एक बहुत बड़ा चर्च बनवाया। धार्मिक प्रवृत्ति होने के चलते उसमें वह लोगों के साथ स्वयं भाग लेने लगा। उसके साथ चर्च में चालीस हजार आदमी इकट्ठे होते। इतनी विशाल उपस्थिति देखकर सम्राट् पीटर ने पादरी से कहा, हमारे देश में धर्म के प्रति लोगों की बड़ी आस्था है। सबसे बड़ा प्रमाण यही है- चर्च में चालीस हजार लोगों की उपस्थिति। पादरी लोगों के ईश्वर भक्त होने की सच्चाई को जानता था। सम्राट् की बात को काटना ठीक नहीं था, इसलिए वह उस समय कुछ बोला नहीं। पादरी को एक उपाय सूझा और दूसरे दिन उसने लोगों के पास एक सूचना पहुँचा दी कि आज सम्राट प्रार्थना में भाग नहीं लेंगे। सम्राट् निश्चित समय पर आए तो देखा प्रार्थना में केवल छह आदमी उपस्थित हैं। सम्राट को बड़ा आश्चर्य हुआ। बोला, कल तो चालीस हजार आदमी थे, आज छह ही क्यों? पादरी बोला सम्राट हमारे राज्य की जनता प्रभु-भक्त नहीं है, राजभक्त है, स्वामिभक्त है सिर्फ आपको देखने आते हैं सब। लोग यह भी चाहते हैं कि उनका चेहरा आपको दिख जाए।

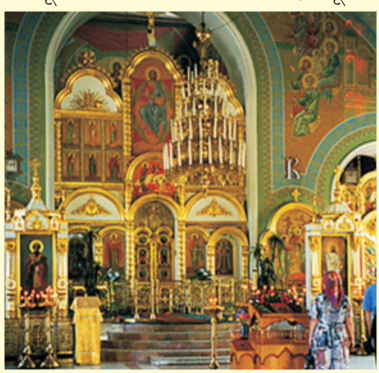

आज मैंने सूचना प्रसारित करवा दी कि सम्राट नहीं आएँगे तो चालीस हजार में से केवल छह आदमी आए। दृष्टिकोण जब तक नहीं बदलता, तब तक कोई प्रभु-भक्त नहीं बनता, केवल स्वामिभक्त या राजभक्त होता है। मूल बात है दृष्टिकोण का परिवर्तन।

साभार -राजस्थान पत्रिका

आर्य समाज रामनगर में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन

आर्य समाज, रामनगर रूड़की में देश की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किए गए प्रयास व बलिदान देने वाले अमर शहीदों में भाई मान्य श्री परमानन्द जी, देश के नवनिर्माण के प्रस्तोता लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल व राजेन्द्र कुमार लाहिड़ी,सरदार रोशन लाल,अशफाक उल्ला खान व शहीद सरदार उधम सिंह के शहादत/जयन्ती पर्व पर इन देशभक्तों के जीवन को विस्तृत रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया ताकि देश अपने अमर सपूतों से प्रेरणा ले सके। कार्यक्रम में सर्वश्री ऋषिपाल जी,सतपाल सिंह, रतन सिंह, रामेश्वर प्रसाद सेन, ज्ञानसिंह सैनी, रामवतार प्रधान, वेद प्रकाश सैनी, डॉ.भारत भूषण, आदि लोगों ने भाग लिया।

तेजपालसिंह आर्य, हरिद्वार

आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा को गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्टेडियम में आयोजित समारोह में स्वायत्तशासन मंत्री श्री शांति धारीवाल के हाथों उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए सम्मानित किया गया। श्री चड्ढा जी को शुभकामनाएं एवं बधाई।

डॉ.के.एल.दिवाकर, कोटा

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी डॉ. आर्येशानन्द सरस्वती जी द्वारा पिण्डवाडा में उनके द्वारा की जा रही चिकित्सा सेवा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर श्री सुरेश चन्द जी सुराणा,एडवोकेट,समाजसेवी सिरोही की अध्यक्षता में स्नेहमिलन आयोजित किया गया।

आर्यसमाज वैशाली नगर,जयपुर के वार्षिक चुनाव ६.१.२०१३ को डॉ.मोतीलाल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। जिसमें डॉ.मोतीलाल शर्मा,श्री आशीष मिनोचा, श्री जे.एन.चौपड़ा को क्रमशः प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। सर्वसम्मति से हुए इस चुनाव में इंजीनियर कृष्णलाल नारंग को संरक्षक का पदभार दिया गया। सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

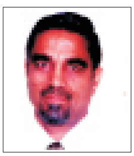

पूज्य आचार्य उमाकान्त जी को पौत्र शोक

आर्य जगत् के मनीषी विद्वान् आचार्य उमाकान्त जी के इकलौते पौत्र का मात्र ८ वर्ष की उम्र में निधन हो गया। इस मर्मान्तक दैवाधीन घटना को आचार्य जी व परिवार ने धैर्यपूर्वक स्वीकार किया है। न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार इस गहन दुःख के अवसर पर हार्दिक सम्वेदना प्रकाशित करते हैं।

वसन्त पंचमी पर कवि सम्मेलन आयोजित

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर में बसन्त पंचमी पर्व के उपलक्ष्य में यज्ञोपरान्त कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ जिसमें डॉ. ज्योतिपुंज, श्री मनमोहन मधुकर, श्री इकबाल हुसैन इकबाल, श्री जगदीश तिवाड़ी, श्री राम दयाल मेहरा, श्री आईना उदयपुरी, श्री प्रेमनारायण जायसवाल, श्रीमती स्वाति 'शकुन्त', श्री दिनेश त्रिवेदी ने बसन्त ऋतु एवं स्वामी दयानन्द जी को समर्पित एवं सामयिक रचनाओं का काव्य पाठ किया। कवि श्री गिरीश जोशी ने सम्मेलन का संचालन किया। अन्त में प्रधान श्री भंवरलाल जी आर्य ने धन्यवाद दिया।

(कृष्ण कुमार सोनी)– उप–प्रधान

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती - – अध्यक्षः वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर

विशिष्ट वेदांग पुरस्कार से सम्मानित

श्री स्वामी जी का आर्य समाज को विशिष्ट योगदान -

१.श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पद पर रहते हुए राजस्थान सरकार से सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना स्थली नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर आर्य प्रतिनिधि सभा को दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में यह स्थान श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नाम से जाना जाता है।

२.श्री स्वामी जी ने अजमेर विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय करवाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। श्री स्वामी जी का राजस्थान सरकार के निवर्तमान मुख्यमंत्री स्व. श्री भैरोंसिंह शेखावत से विशेष सम्पर्क था। श्री स्वामी जी ने अपने इस प्रभाव का उपयोग कर इन कार्यों को करवाया।

३.राजस्थान प्रान्त के अलवर जिले की तिजारा तहसील के सारे खुर्द गांव में मध्य प्रदेश का केडिया ग्रुप शराब का कारखाना लगाना चाहता था जिसके लिए ६०० एकड़ भूमि के अधिग्रहण करने की तैयारी थी। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने किसानों को साथ लेकर आर्य समाज के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। इसमें लगभग ६ हजार लोगों ने भाग लिया। उसी दिन मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत ने शराब के कारखाने को न लगाने की घोषणा की। इस आन्दोलन से जनता पर आर्य समाज का अच्छा प्रभाव रहा।

४.श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती प्रतिवर्ष अनेक विद्वानों को साथ लेकर यात्राओं के माध्यम से वेदप्रचार अभियान चलाते हैं उनका यह अभियान सन् २००२ से निरन्तर जारी है। इस अभियान से सैकड़ों ग्रामों के हजारों श्रोताओं में वेद सन्देश जाता है।

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा पू. स्वामी जी के अतिरिक्त डॉ.सूर्यादेवी चतुर्वेदा (वाराणसी) एवं डॉ. कमलेश शास्त्री (अहमदाबाद) को क्रमशः वेदवेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया।

साभार–नूतन निष्काम पत्रिका

क्यों हटा दिए नासा ने अपनी वेबसाइट से यूएफओ के फोटो ?

यूएफओलॉजिस्ट का कहना है नासा ने हाल ही में अपने फोटो संग्रह से

यूएफओ के फोटो हटा दिए हैं। ये फोटो इस बात के प्रमाण हैं कि किसी अन्य ग्रह के लोग हमारे ग्रह पर आते रहे हैं और नासा यह बात छुपाने की कोशिश कर रहा है। मई २०११ तक यह फोटो नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर वेबसाइट पर थे। इनमें साफ–साफ नजर आता था कि यह एडवांस डिजाइन के एयरक्राट हैं। करीब डेढ़ साल तक नासा की वेबसाइट पर रहने के बाद इन तस्वीरों को अचानक हटा दिया गया है। यह बात दुनियाभर के यूएफओलॉजिस्ट में चर्चा का विषय बनी है। कुछ का मानना है कि नासा इससे किसी अन्य ग्रह के प्राणियों के आने की बात छुपाना चाहता है। नासा को अंदाजा नहीं था कि उनकी सुपर सीक्रेट तस्वीरों को लोग देख रहे हैं। इससे एलियन से जुड़े किस्सों को बढ़ावा भी मिल रहा है। नासा का कहना है कि इनमें से कई फोटोग्राफ वेबसाइट की अलग–अलग लोकेशन पर सेव हैं। लेकिन ये यूएफओ के फोटो नहीं स्पेस डेब्रिस (अंतरिक्ष का कचरा) हैं।

श्री अशोक आर्य जी निवेदन है कि सत्यार्थ सौरभ का जनवरी २०१३ का अंक पढा । हलचल प्रकरण में आप द्वारा दी गई जानकारी का अध्ययन किया। टाण्डा में मुस्लिम बालिकायें वेद ज्ञान प्राप्त कर रही हैं। यह बहुत ही खुशी की बात है। बलिकाएँ नमस्ते करती हैं,यज्ञ में बढ चढ़कर भाग लेती हैं। बालिकाओं को श्रीमती रूखसाना बानो रसायन शास्त्र पढ़ाती हैं। और वे बड़ी प्रसन्न हैं। यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि वेद प्रचार कार्य सफलता की ओर बढ़ रहा है। इसी प्रसंग में अपना अनुभव लिख रहा हूं। मैं २००८–०९ में आर्य समाज शाहपुरा के विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत था। प्रत्येक शनिवार को प्रार्थना के समय यज्ञ करवाता था। सभी बालक बालिकाएँ यज्ञ में शामिल होते थे। विशेष तौर से एक मुस्लिम बालिका आगे आकर बैंठ जाती और मुझसे कहती कि सर मुझे भी यज्ञ करना सिखाइये। उसकी रुचि जानकर मैंने उसे वैदिक पद्धति से यज्ञ करना सिखा दिया। बालिका बड़ी प्रसन्न चित्त मुद्रा में रहती और यज्ञ कार्य में हमेशा आगे रहती थी।

–कन्हैया लाल साहू, आर्य समाज,डोहरिया

सम्मानीय अशोक जी,सत्यार्थ सौरभ अंक सितम्बर २०१२ मेरे हाथ में है। सूचना तकनीकी नवाचार व हिन्दी भाषा साहित्य उत्कृष्ट प्रस्तुति है। इनके लेखक डॉ.दुर्गाप्रसाद अग्रवाल का पूरा पता व मोबाइल नम्बर देने की कृपा करें। 'माथे की बिन्दी यह भारत की हिन्दी' सुन्दर उद्बोधन दिया है। सत्यार्थ प्रकाश का पॉकेट साइज प्रकाशन निकालें, निःशुल्क वितरण के लिए समाजें खरीद लेंगी।

नानक चन्द लोहिया,आर्य समाज मार्ग,हल्द्वानी

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सौरभ का नवम्बर २०१२ का अंक पढ रहा हूँ। आदरणीया 'सत्यार्थ दूत' सरोज आर्या का लेख पढा 'श्राद्ध दैनिक कर्म है' । उन्होंने बड़ी अच्छी व्याख्या की है। समझने वाले तो समझ जाते हैं,जो न समझे वे तो अनाड़ी ही हैं। अन्ध श्रद्धा का श्राद्ध यहाँ भी लोग करते हैं। सोये लोग अभी भी नहीं जाग पाये हैं। स्थानीय कवि ने भी अच्छा लिखा है।' जियत पर घूँसा लात, मरल पर दूध भात।' ये दिखावा यहाँ भी है। मगरमच्छ के आँसू बहाने वाले और नकली पंडितों के पाँव पूजने में लगे हैं।

कहते हैं जो मर गया उसका जन्म किसी अन्य योनि में हो जाता है। आदमी है या नहीं। कीट पतंग गाय, बैल भी बनकर आ सकते हैं। तो उन्हें कैसे योनि के मुताबिक भोजन पहुँचायें। हम अन्न, जल दूध भात देते है। जानवर की योनि में घास पात खाते हैं। तो एक पंडित ने कहा कि जैसे हम पैसा विदेश भेजते हैं तो हमारे देश का पैसा वहाँ की मुद्रा में बदल जाता है। पाउण्ड या यूरो बन जाता है और उन्हें मिल जाता है। यह कैसा घटिया तरीका बताया है। वही पूज्य माना जाता है। आज भी।

दूसरी बात पुराने जमाने में एक कटहा पंडित हुआ करता था। श्राद्ध में उन्हें बुलाते थे। वह दूध पीता था। गले में दूध लेकर गड़गड़ाता रहता था कि दूध नीचे नहीं उतर रहा है। कोई कारण है– तो होता क्या था हर पंडित का एक ठाकुर होता था। मृत व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करके पंडित को ही बता देता था कि मरे हुए व्यक्ति के कौन कौनसे सामान हैं जैसे सोने के बटन, बढिया कोट,सोने की जंजीर,पगड़ी गाय और कोई जानवर धन दौलत सबकी लिस्ट की जानकारी होती थी। और कटहा बाबाजी एक के बाद एक का नाम लेता जाता था। लोग ला लाकर उनके सामने रखते जाते थे। वह दूध गड़गड़ाता जाता था। सब चीजें आ जाने पर दूध कंठ में उतर जाता था। बाबाजी आशीर्वाद की बौछार कर सबका सामान बटोरकर चलता बनता था, दूसरे के मरने की प्रतीक्षा में। घर वाले सन्तुष्ट उनके माता पिता को स्वर्ग में सब कुछ मिल जायेगा, ऐसा अनुमान लगाते थे। आजकल कटहा पंडित नहीं है। आधुनिक पंडित भी वही ठग विद्या अपनाकर उल्लू सीधा कर रहे हैं।

सोनालाल नेमधारी –मॉरीशस

आपके द्वारा कृपापूर्वक प्रेषित 'सत्यार्थ सौरभ' का नवम्बर २०१२ का अंक प्राप्त कर मन प्रफुल्लित हो गया। मुख पृष्ठ ने ही मन सुमन खिला दिया। भीतर वेद सुधा का पान किया। 'स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अनूठा सन्तुलन आलेख से थोड़ी शिक्षा ग्रहण की। 'ऋषिवर का सत्यार्थ प्रकाश' कविता का रसास्वादन किया तथा अन्य तमाम सारगर्भित ज्ञानवर्द्धक एवं असरदार आलेखों को बांचकर आह्लादित एवं अभिभूत हुआ। संपूर्ण पत्रिका आद्योपान्त सत्य शिव सुन्दर है। इस अद्भुत पत्रिका के माध्यम से आप संपूर्ण विश्व में सत्यार्थ सौरभ बिखेर कर बड़ा श्लाघनीय एवं कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं।

सौरभ से सत्यार्थ की, महक रहा संसार।
दयानन्द संदेश ने, स्वप्न किए साकार
मंगलमय हो वर्ष नवल
खिलें, खुशी के सुमन सकल
बिखरे जग में ज्योति धवल।

– मिर्जा हसन नासिर, लखनऊ

सत्यार्थ-पीयूष

बाल शिक्षा

-डॉ.वरुण मुनि, कोटा

स्वामी दयानन्द के अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाशस्थ बालशिक्षान्तर्गत निर्देशों के आधार पर विद्वानों ने प्रसूता स्त्री के स्वास्थ्य और सन्तानों के लालन-पालन-पोषण के लिए कुछ आवश्यक निर्देश दिये हैं जो निम्न प्रकार हैं-

१. जब बालक का जन्म हो तब माता अपने आहार, व्यवहार को ऐसा बनाए जिससे कि उसका स्वयं का और बालक का शरीर स्वस्थ, निरोग तथा बलवान हो जाए। अतः माता को प्रसूता रोगों से बचने के लिए दशमूल काढ़ा या दशमूलारिष्ट का सेवन अवश्य करना चाहिए।

२. माता को अपना खान-पान ऐसा बनाना चाहिए कि उसका दूध प्रचुर मात्रा में तथा निर्दोष उत्पन्न हो।

३. यदि माता का दूध बालक के लिए पर्याप्त न हो तो गाय या बकरी का दूध पिलावें। यदि उबालते समय उसमें रत्ती भर सोंठ डाल दी जाए तो दूध सुपाच्य और पौष्टिक हो जाता है।

४. परिश्रम से माता का शरीर गर्म हो जाय और पसीना आ रहा हो तब माता को अपना दूध नहीं पिलाना चाहिए।

५. माता को खड़े खड़े और स्तनों को लटकाकर दूध नहीं पिलाना चाहिए अपितु शान्ति से बैठ कर बच्चे को गोदी में लेकर, उसका सिर थोड़ा ऊँचा रखकर दूध पिलाना चाहिए।

६. बालक के दाँत निकल आने के बाद माता को अपना दूध छुड़ा देना चाहिए।

७. जब तक बालक स्वयं बैठने न लगे तब तक जबरदस्ती बैठाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

८. बालक को तेज सर्द-गर्म हवा, आँधी, बिजली, बरसात और सूरज की तेज किरणों की चकाचौंध से बचाना चाहिए। परन्तु ठण्ड से बचाव के लिए ऊन के अधिक वस्त्र पहनाकर इतना अधिक भी प्रकृति से दूर नहीं रखना चाहिए कि शरीर की प्रतिरोध शक्ति बढ़ने के स्थान पर घटने लगे और ऐसी आदत पड़कर बड़ा होने पर सुविधा भोगी हो जाए।

९. बालक को कभी भूतप्रेत, बाबा या चूहे-बिल्ली आदि का नाम लेकर डराना नहीं चाहिए। इससे बालक डरपोक बन जाता है और बड़ा होने पर भी वह डरपोक बना रहता है। दूसरा भय के कारण बीमार होने का खतरा रहता है।

१०. माता-पिता बालक के प्रति प्यार और ममता तो प्रदर्शित करें परन्तु मोह बिल्कुल नहीं। क्योंकि मोह से माता-पिता विशेषकर माता का विवेक कुंठित हो जाता है। जिससे बालक के अनुचित व्यवहार दिखाई नहीं देते। यदि दिखाई भी देते हैं तो माता पिता ताड़न न कर लाड़न ही करते रहते हैं। जिसका विपरीत परिणाम निकलता है।

११. लाड़-प्यार के कारण बालकों को अधिक समय तक गोदी में नहीं रखना चाहिए। अपितु नर्म बिछोने पर सुला रखना चाहिए। जिससे बालक स्वेच्छा पूर्वक हाथ पैर हिला सके। इससे बालक का व्यायाम हो जाता है और उसका खाया पीया पच जाता है।

१२. लाड-प्यार के वशीभूत, बालक को हाथ खर्च के रूप में रुपये पैसे देते रहने से बालक बचपन से ही फिजूल खर्च हो जाता है और अंट संट चाट की चीजें खाकर अपने स्वास्थ्य को खराब कर लेता है।

१३. बालक को सदैव नहला धुलाकर सादी और धुली हुई वेशभूषा ही पहनानी चाहिए। तड़क भड़क के वस्त्र पहनाये रहने से बालक बड़ा होने पर फैशनेबल हो जाता है। 'सादा जीवन और उच्च विचार' जीवन जीने के इस सिद्धान्त को बालक में प्रारम्भ से ही कूट कूट कर भर देना चाहिए।

१४. बालक को यदि किसी कारणवश भूखा रखना पड़े तो सब खाद्य पदार्थ छुड़ा सकते हैं। किन्तु दूध कभी नहीं छुड़ाना चाहिए, क्योंकि दूध ही बालक का जीवन है।

१५. बालकों को, माता पिता सदा उत्तम शिक्षा देवें जिससे सन्तान सभ्य बने तथा किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें।

'सत्यार्थ सौरभ' परिवार' के सभी सदस्यों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस माह विदुषी लेखिका 'सत्यार्थ दूत' श्रीमती सरोज आर्या 'वर्मा' द्वारा लिखित, प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. मदन मोहन जावलिया द्वारा सम्पादित, सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है' नामक पुस्तिका उनके स्वाध्याय हेतु श्री ओ.पी. वर्मा, मंत्री, स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार प्रसार न्यास, जयपुर के सौजन्य से सम्प्रेषित की जा रही है। न्यास इस हेतु श्री ओ.पी. वर्मा व श्रीमती वर्मा का आभार प्रकाशित करता है।

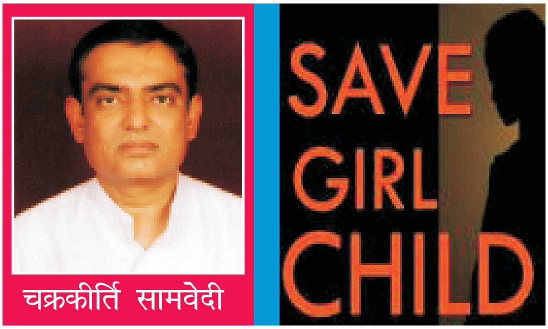

समाज में अन्धविश्वास, पाखण्ड, सामाजिक बुराईयों के लिये संघर्षरत् रहने वाले आर्य समाज ने एक बार पुनः भ्रूण हत्या के विरुद्ध आन्दोलन छेड़कर व ''बेटी-बचाओ अभियान'' चलाकर अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज की है। भारतवर्ष में सर्वप्रथम कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध वर्ष २००५ में दीपावली १ नवम्बर, २००५ को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द

सरस्वती की जन्मस्थली टंकारा, गुजरात से एक सर्वधर्म जन चेतना यात्रा प्रारम्भ की गई, जो कि १५ नवम्बर २००५ को गुरुनानक दिवस पर अमृतसर के जलियाँवाला बाग में समाप्त हुई। इस आन्दोलन के प्रणेता स्वामी अग्निवेश थे व उनके सहयोगी थे श्री जगवीर सिंह व राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी। इस यात्रा का जयपुर में संयोजक सौभाग्य से इस लेख का लेखक था।

कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध यह आन्दोलन का सूत्रपात था जिसको सम्पूर्ण भारतवर्ष में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, बहाई आदि सभी धर्मों का अत्यन्त उत्साहपूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् तो जैसे सम्पूर्ण देश कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध सड़कों पर उतर आया। मीडिया का इसमें योगदान अत्यन्त सहयोगात्मक रहा है। फिर चाहे वो प्रिन्ट मीडिया हो या इलैक्ट्रोनिक।

आज समाज में एक जागृति आ रही है। कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अनेक संगठन एकत्रित होकर आन्दोलनरत् हैं। हमारे समाज की अनेक कुरीतियों, कुप्रथाओं, कर्मकाण्ड, पुत्र कामना, गरीबी, कन्याओं के प्रति परम्परागत विकृत सोच के कारण कन्या भ्रूण हत्या जैसी अनैतिक, अवैध व अमानवीय घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं।

समाज में लडके को ही मुखाग्नि (पिता की चिता को अग्नि प्रदान करना) देने का अधिकार होना, पुत्र को पितरों को तर्पण करने का अधिकार होना, लडकों को दहेज मिलना एवं लडकी के पैदा होते ही दहेज का सामान जोडने की चिन्ता, वृद्धावस्था में लडके से सेवा सुश्रुषा की आशा रखना, ऐसी कुरीतियाँ व स्थितियाँ हैं, जो लडकी को बोझ मानती हैं एवं इसी से बचने के लिये वे अपनी कन्याओं की हत्या जैसे जघन्य कृत्य करने को दुष्प्रेरित होते हैं। जबकि विभिन्न सर्वेक्षणों में यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि लडकों की अपेक्षा लडकियाँ अपने वृद्ध माता-पिता के पालन-पोषण एवं सेवा सुश्रुषा में अधिक कुशलता से देखरेख एवं सेवा करती हैं।

कन्याओं की संख्या में कमी होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि जब से जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम ने एक बच्चे की धारणा को प्रोत्साहित किया है तब से ज्यादातर माता-पिता नर शिशु पैदा करने को प्राथमिकता देते हैं।

इसी कारण बहुत भारी संख्या में अजन्मे शिशु के लिंग निर्धारण के परीक्षण किये जाते हैं एवं यदि कन्या शिशु का भ्रूण होता है, तो उस गर्भ को समाप्त कर दिया जाता है। पहले यह परीक्षण बच्चे व बच्चेदानी के बीच में पानी (Amniocentesis-गर्भजल) के द्वारा होता था, लेकिन अब अल्ट्रासाउण्ड विधि से भ्रूण के लिंग को जाँचा जाता है। अल्ट्रासाउण्ड जाँच के दौरान भ्रूण के जनन अंगों को देखा जाता है ताकि शिशु के लिंग का सुनिश्चय हो सके। यह केवल तभी सम्भव है, जब गर्भावस्था २० सप्ताह के आस-पास या इससे अधिक हो। ज्यादा छोटे भ्रूण का जनन अंग ठीक से नहीं दिखने के कारण यह जाँच गर्भ के बढ़ने पर ही होती है। परन्तु इतनी देर से किये गये गर्भपात खतरनाक साबित हो सकते है। इन परिस्थितियों में किया गया गर्भपात स्त्री के लिये ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है, जिससे कि उसके लिये भविष्य में गर्भधारण मुश्किल हो जाये। कई बार महिलाएँ ऐसी परिस्थिति का शिकार होती हैं, जहाँ उनका अपने जीवन व शरीर पर कोई नियंत्रण नहीं होता, उन्हें कन्या भ्रूण हत्या के इरादे से लिंग निर्धारण के लिये मजबूर किया जाता है, क्योंकि उस पर घरवालों का दबाव होता है। शहरों एवं गाँवों दोनों में ही असुरक्षित गर्भपात करवाए जाते हैं। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि कन्या भ्रूण हत्या का आँकड़ा शहरों में पढ़े-लिखे वर्ग में गाँवों के मुकाबले अधिक है।

भारत में १६०१ से लगातार प्रति हजार महिलाओं की संख्या में गिरावट आयी है। १६६१ से २००१ के बीच इस संख्या में महिलाओं की स्थिति कुछ सुधरी है परन्तु यह नगण्य है।

भारत की जनगणना, २००१ पर आधारित आंकड़े

विवरण	भारत				राजस्थान			
	कुल	पुरुष	स्त्री	अन्तर	कुल	पुरुष	स्त्री	अन्तर
० से ६ आयु वर्ग की जनसंख्या	१६३,८१६,६१४	८४,९९९,२०३	७८,८२०,४११	६१७८७९२	१०,६५१,००२	५,५७९,६१६	५,०७१,३८६	५,०८,२...... .
कुल जन संख्या	१,०२८,६१०,३२८	५३२,१५६,७७२	४९६,४५३,५५६	३५,७०३,२१६	५६,५०७,१८८	२९,४२०,०११	२७,०८७,१७७	२३,३२,८
लिंग अनुपात	९३३				९२१			

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि हमारे देश की १०२.८६ करोड़ की जनसंख्या में पुरुषों की संख्या ५३.२१ करोड़ व स्त्रियों की संख्या ४९.६४ करोड़ के हिसाब से ३.५७ करोड़ स्त्रियों की कमी है। राजस्थान में स्त्री-पुरुष लिंगानुपात में सर्वाधिक अन्तर जैसलमेर जिले में है, जहाँ पर कि प्रति १००० पुरुषों के पीछे मात्र ८२१ स्त्रियाँ हैं। इसके पश्चात् धौलपुर (८२७) व भरतपुर (८५४) जिलों का नम्बर आता है।

देश में कम शिशु दर वाले प्रदेश एवं उनमें प्रति हजार पुरुषों के पीछे महिलाओं की संख्या के आँकड़े कुछ इस प्रकार से हैं -

हरियाणा- भिवानी (८३८),पंचकुला (८३७), फतेहाबाद व हिसार (८३०), यमुनानगर व पानीपत (८०७) तथा झज्जर (८०५)

पंजाब- गुरदासपुर (७७५), अमृतसर (७८३), कपूरथला (७७५), फतेहगढ़साहब (७५४), भटिण्डा, मानसा एवं पटियाला (७७६), तथा संगरूर (७८४)

हिमाचल प्रदेश- ऊना (८३६) तथा कांगड़ा (८३६)

गुजरात- राजकोट (८४४),गाँधीनगर(८१६), अहमदाबाद (८१४), तथा मेहसाणा (७९८)।

उक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि देश में कम शिशु दर वाले प्रदेश वह हैं जो आर्थिक रूप से समृद्ध व सम्पन्न माने जाते हैं आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि कन्या भ्रूण हत्या निर्धन व अशिक्षितों की अपेक्षा सम्पन्न व शिक्षितों में अधिक है।

कन्या भ्रूण हत्या के मामले में व स्त्री-पुरुष के बीच लिंगानुपात में अन्तर की सर्वाधिक भयावह स्थिति देश के समृद्ध माने जाने वाले राज्यों पंजाब व हरियाणा में है, जहाँ पर कि वर्तमान में प्रत्येक १००० पुरुषों के मुकाबले क्रमशः ८५७ व ८६१ तथा कन्या व पुरुष शिशु लिंगानुपात में अन्तर क्रमशः ७९३ व ८२० है। हाल ही में हरियाणा में किए गये एक सर्वे में बताया गया है कि अगर इस राज्य में लिंगानुपात की यही स्थिति रही तो अगले २५ वर्षों में १००० पुरुषों पर केवल ५०० महिलाएँ ही रह जायेंगी। यही स्थिति पंजाब में है, यदि पंजाब में भी इसी प्रकार की स्थिति बनी रहती है, तो एक सदी के बाद यहाँ १००० पुरुषों के पीछे शायद ७ ही स्त्रियाँ होंगी।[५]

निम्नलिखित आँकड़े देश में कन्या भ्रूण हत्या के कारण बिगड़ते लिंगानुपात की आश्चर्यजनक एवं भयावह स्थिति प्रकट करते हैंः-

१. अहमदाबाद के एक अस्पताल में साल भर में ११०० बच्चों का जन्म हुआ, जिसमें से केवल ६ लड़कियाँ थी। पंजाब के एक गाँव में ५० वर्ष से ज्यादा उम्र के कई पुरुष अविवाहित हैं, क्योंकि उन्हें शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिली।

२.राजस्थान के एक गाँव देवड़ा में गत १०० वर्षों में पहली बार बारात आई।

३.८० के दशक के मध्य में मुम्बई में कन्या भ्रूण हत्या के ५०,००० मामले सामने आये और इनमें से २०,००० एक ही क्लीनिक के थे।

४.एक अस्पताल में गर्भपात के ८,००० मामलों में से केवल एक मामला ऐसा था कि जिसमें नर भ्रूण को समाप्त किया बाकी सभी मामले मादा भ्रूण के थे।

जहाँ-जहाँ भी लिंग परीक्षण की सुविधा उपलब्ध है, वहाँ-वहाँ कन्या भ्रूण की हत्याओं में वृद्धि हुई है। भारत में २५,००० पंजीकृत अल्ट्रासाउण्ड केन्द्र हैं, जहाँ गर्भ में भ्रूण की आनुवांशिक विसंगति देखे जाने की व्यवस्था है। तमिलनाडु के

सलेम जिले में, चम्बल के बीहड़ में, राजस्थान के आदिवासी इलाकों में तो लिंग परीक्षण के मोबाईल क्लिनिक काम कर रहे हैं।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि देश में महिलाओं पर अत्याचार निश्चित रूप से बढ़ेंगे। पुरुषों को विवाह योग्य स्त्रियाँ उपलब्ध न होने पर बहु-पति प्रथा का चलन में आना समाज की मजबूरी होगा। इससे समाज में नैतिक, मनोवैज्ञानिक व कानूनी समस्यायें पैदा होंगी। औरतों के प्रति हिंसक घटनाएँ जैसे दहेज के लिए हत्या, जलाकर मार देना, जहर देना, उनके ऊपर तेजाब फैंकना, बलात्कार, मानसिक यातना, चिकित्सकीय उपचार ना देना, मायके के परिवारजनों से व मित्रों से न मिलने देना, अपने ही जीवन एवं शरीर के निर्णय लेने का हक ना देना, अवैध सम्बन्ध, अपहरण, वेश्यावृत्ति व बाल-विवाह आदि बढ़ेंगे।

राजस्थान में होने वाली कुल हत्याओं का ३६ प्रतिशत हिस्सा दहेज-मृत्यु व आत्महत्या के खाते में दर्ज होता है। यह उस देश की स्थिति है, जहाँ पर कि लक्ष्मी, दुर्गा और सरस्वती को धन, शक्ति व विद्या का रूप माना जाता है एवं वर्ष में दो बार नवरात्रों में एक नहीं नौ-नौ देवियों की पूजा की जाती है। कुछ तो विचार करें।

शहीदे आज़म – भगतसिंह

घोड़ी पंजाबी भाषा का लोकगीत रूप है, जिसमें दूल्हा बारात ले जाने और दुल्हन लाने के लिए चलते समय घोड़ी पर चढ़ता है और उसके पीछे सरवाला, जो अक्सर उसका छोटा भाई होता है, वह बैठता है। भगत सिंह के संदर्भ में घोड़ी लोकगीत रचने वाले लोक कवियों ने मौत को भगत सिंह की दुल्हन के रूप में चित्रित करते हुए भगत सिंह को चाव से अपनी दुल्हन को प्राप्त करने का बिम्ब सृजित किया है। मौत यानी फाँसी पर चढ़ने जाते वक्त भगत सिंह का दूल्हे की तरह घोड़ी पर चढ़कर जाना लोकमानस का ऐसा बिम्ब है, जिसने भगत सिंह को सदियों तक के लिए लोकमानस में ऐसे प्रतिष्ठित कर दिया है कि उसका हाल में उभरकर आया वैचारिक पक्ष उसे और सुदृढ़ तो कर सकता है, लेकिन उस बिम्ब को बदल नहीं बदल सकता।

पंजाबी (गुरमुखी व फ़ारसी- दोनों लिपियों में) १९३१ के आसपास मिलते-जुलते शब्दों वाली भी कई घोड़ियाँ छपीं। शायर मेला राम तायर व महिन्दर सिंह सेठी 'अमृतसरी' की घोड़ियों के कई हिस्से मिलते-जुलते हैं। शायर तायर ने २३ मार्च १९३२ को लाहौर में भगत सिंह की शहादत के एक बरस बाद यहाँ प्रस्तुत घोड़ी को तांगे पर चढ़कर बाज़ार में गाया। इस घोड़ी सम्बंधी, हिन्दी-पंजाबी लेखक गौतम सचदेव ने हंस (जनवरी-अप्रैल २००७) अंक में दिलचस्प किस्सा बयान किया है। गौतम सचदेव के अनुसार उसके ससुर राम लुभाया चानणा स्वतंत्रता सेनानी थे और १९९८ में संयोग से गौतम की भेंट इस घोड़ी के शायर तायर से हो गयी, जो उस समय सौ बरस के हो चुके थे, लेकिन उस उम्र में भी उन्हें घोड़ी पूरी तरह याद थी और गौतम ने टेपरिकार्डर में तायर की यादें और घोड़ी उन्हीं के स्वर में रिकार्ड की। इसी घोड़ी को लीजेंड आफ भगत सिंह फ़िल्म में भी गीत के रूप में इस्तेमाल किया गया। इस घोड़ी का देवनागरी में लिप्यन्तरण व हिन्दी में भावार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

घोडी भगत सिंह शहीद
आवो नी भैणों रल गावीए घोडियाँ
जँञां ते होई ए तियार वे हां
मौत कुडि नूं परनावण चल्लिया
देशभगत सरदार वे हाँ।
(आओ बहनो मिलकर घोड़ियाँ गाएँ
बारात तो चलने को तैयार है।
मौत दुल्हन को ब्याहने के लिए
देशभक्त् सरदार चला है।)
फाँसी दे तख्ते वाला खारा बाणा के,
बैठा तूं चौंकडी मार वे हाँ
हंझूआं दे पाणी भर नाहवो गडोली
लहूँ दी रत्ती मोहली धार वे हाँ।
(फाँसी के तख्ते को पटरी बनाकर
तुम चौकड़ी मारकर बैठे हो।
लोटे में आँसूओं के जल को भरकर
नहाओ (१)
लहू की लाल मोटी धार बनी है।)
फाँसी दी टोपी वाला मुकुट बणा के,
सिहरा तूँ बद्धा झालरदार वे हाँ।
जंडी ते वड्ढी लाडे जोर जुलम दी
सबर दी मार तलवार वे हाँ।
(फाँसी की टोपी वाला मुकुट बनाकर
तुमने झालरों वाला सेहरा पहना है
जोर जुलम की जंडी(२) को तुमने
सब्र की तलवार से काट दिया है।)
राजगुरु ते सुखदेव सरबाले
चढिया ते तूँ ही विचकार वे हाँ
वाग फडाई तैथों भैणा ने लैणी
भैणा दा रखिया उधार वे हाँ।
(राजगुरु व सुखदेव तुम्हारे सरबाले बने हैं।
और तुम उनके बीच में चढ़कर बैठे हो।
घोड़ी की लगाम पकड़ाने का शगुन तुमने
बहनों से उधार रखा है।)
हरी किशन तेरा बणिया वे सांढू,
ढुक्के ते तुसीं इको बार वे हाँ
पैंती करोड तेरे जांइ वे लाडिया
कई पैदल ते कई सवार वे हाँ।
(हरिकिशन (३) तुम्हारा साढू भाई बना है
तुम दोनों एक ही द्वार पर पहुँचे हो
ओ दूल्हे, तुम्हारे पैंतीस करोड़ (४) बाराती हैं
कुछ पैदल व कुछ सवारियों पर हैं।)
कालीआँ पुशाकाँ पाके जँञां तु तुर पईं,
ताइर वी होइया ए तिआर वे हाँ
(काली पोशाकें पहनकर बारात जब
चल पड़ी तो तायर भी तैयार हो गया है।)

नोट-
१- घोड़ी पर चढ़ने से पहले दूल्हे को नहलाया जाता है।
२- दूल्हा घोड़ी पर चढ़कर गांव के बाहर जंड के वृक्ष को तलवार से काटता है, यह भी इस रीति का हिस्सा है।
३- हरिकिशन को पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर में गर्वनर पर गोली चलाने के कारण १ मई १९३१ को फाँसी दी गयी थी।
४- पैंतीस करोड़ उन दिनों अविभाजित भारत की आबादी थी। शायर तायर ने १९९८ में इसे दोबारा गाते समय अस्सी करोड़ कर दिया था।

(जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चमन लाल, भगत सिंह के विशेषज्ञ हैं।)

शब्द यात्राएँ

अर्भक से ऑ : फॅन (Orphan) तक

डॉ. पूर्ण सिंह डबास

संस्कृत का अर्भ वैदिककालीन शब्द है जो-'तुच्छ, छोटा तथा महत्वहीन' का बोधक है। इसका विस्तार अर्भक है जो - 'मात्रा, आकार या आयु आदि की दृष्टि से छोटा; अति लघु, दुबला-पतला, बालक तथा पशु' आदि के अर्थों में प्रयुक्त होता है।

संस्कृत में इनके अर्भस् (=बालक, शिशु) तथा अर्भकस् (=बालक, पशु-शावक) रूपान्तरण भी मिलते हैं। हिन्दी में भी अर्भक का प्रयोग 'शिशु' के अर्थ में होता है।तुलसीकृत रामचरितमानस में परशुराम कहते हैं-'गर्भन के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर'।

जैसाकि सर्वविदित तथ्य है कि संस्कृत की घ, ध तथा भ-सघोष महाप्राण ध्वनियाँ भारतीय आर्य भाषाओं से भिन्न किसी दूसरी भाषा में नहीं मिलती। अतः इन ध्वनियों से युक्त कोई भी शब्द जब संस्कृत आदि किसी भारतीय आर्य भाषा से किसी दूसरी भाषा में पहुँचता है तो ये ध्वनियाँ उस भाषा में उपलब्ध अपनी निकटतम अघोष -महाप्राण, या सघोष-अल्पप्राण ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती हैं। इसी नियम के अनुसार सं. अर्भस् जब यूनानी (ग्रीक) भाषा में पहुँचा तो इसकी भ ध्वनि ने (वहाँ मौजूद अघोष महाप्राण ध्वनियों-ख, थ, फ में से अपनी निकटतम ध्वनि) फ का रूप धारण कर लिया परिणामतः अर्भस वहाँ ओर्फानोस् बन गया। ग्रीक से यह परवर्ती लैटिन भाषा में गया जहाँ इसका रूप हो गया- ओर्फानुस्।

यों लैटिन में, सं.अर्भस् के बहुत निकट इसका एक रूप ओर्बस् (orbus) 'अनाथ, वंचित' भी मिलता है जिसमें अर्भस् का सघोष-महाप्राण भ अल्पप्राण होकर ब में बदल गया है। इससे यह भी संभावना हो सकती है कि अर्भस् को ग्रीक तथा लैटिन ने एक साथ ग्रहण किया हो।

लैटिन का ओर्फानुस (orphanus) वहाँ से चलकर अंग्रेजी में पहुँचा जहाँ इसने ऑ:फॅन (orphan, हिन्दी में प्रचलित उच्चारण ऑर्फन) का रूप धारण कर लिया। फ्रांसीसी, इतालवी तथा स्पेनी में यह क्रमशः Orphelin, Orfano तथा huerfano रूप में प्रयुक्त होता है।

सं. अर्भस् जहाँ बालक या शिशु का बोधक था वहाँ ग्रीक-लैटिन में 'अनाथ, वंचित' एवं परिणामतः अंग्रेजी में 'माता-पिता रहित बालक' तथा 'वंचित' का बोधक हो गया। स्वाभाविक है जो माता-पिता से विहीन होगा वह 'निराश्रित, अनाथ या यतीम' तो होगा ही।

जैसी कि सं. अर्भक/अर्भस् के लैटिन रूपान्तरण ओर्बस् (orbus) की चर्चा ऊपर की जा चुकी है, इससे मिलते-जुलते या समस्रोतीय शब्द यूरोप की अनेक भाषाओं में मिलते हैं। उदाहरण के लिए 'दाय भाग, विरासत या बपौती' के बोधक, प्राचीन अंग्रेजी का ierte, प्राचीन उच्च जर्मन का erbi, पुरानी नॉर्वेजियन का arti, गौथिक का arbi, तथा पुरानी आयरिश का orbe, इसी प्रकार के शब्द हैं।

यह सुनिश्चित है कि संसार की समस्त भाषाओं में वेद भाषा से ही शब्द गए हैं। विद्वानों का मानना है कि 'पशु' शब्द को तो वेदों में अनेक स्थलों पर पाया जाता है।

यथा -'आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं

(संदर्भ :- पशु से फीस तक)

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

•आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

निवेदक

भवानीदास आर्य मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया उपमंत्री-न्यास

योगाचार्य
डॉ.नरेन्द्र कुमार सनाढ्य

आम आदमी पर देवरों की मार

वर्तमान समय में आम आदमी बढ़ती हुई महँगाई से त्रस्त है। महँगाई को कितना भी कोस लें लेकिन एक व्यवसाय है जिस पर महँगाई का कोई असर पड़ता दिखाई नहीं दे रहा। और वह है **देवरों का मक्कड जाल।** आम आदमी अपनी गाढ़ी कमाई को इन देवरों पर लुटाता जा रहा है। देवरों पर अपनी पसीने की कमाई को लुटाते समय न तो महँगाई नजर आती है न ही रुपये का अवमूल्यन। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के समय महँगाई का रोना रोया जाता है लेकिन देवरों के लिए महँगाई कहीं आड़े नहीं आती। इसका मूल कारण अशिक्षा है। **स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस अशिक्षा को दूर करने का प्रयास किया।** लेकिन इस अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हैं एवं इस अंधविश्वास के दोहन की प्रक्रिया इतनी योजनाबद्ध तरीके से बनायी गई है कि

तमाम प्रयासों के बावजूद अंधविश्वास की जड़ें हिलने का नाम ही नहीं लेती। इस अशिक्षा को दूर करने की जिम्मेदारी हम पर तो है ही लेकिन सर्वाधिक जिम्मेदारी मीडिया की है। आज के समय में शिक्षा का सबसे प्रभावी माध्यम मीडिया है। लेकिन मीडिया अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह नहीं निभा रहा है। कहीं तो उसका रवैया पक्षपात पूर्ण हो जाता है और कहीं उसका मूल उद्देश्य शिक्षा देने के बजाय अपनी टीआरपी बढ़ाना हो जाता है। कभी मीडिया किसी एक बाबा के पीछे हाथ धोकर पड़ जाता है तो कहीं दूसरी ओर अपने ही किसी अन्य चैनल पर अंधविश्वासों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम दिखाता है। समझ में ही नहीं आता कि मीडिया क्या संदेश देना चाहता है। एक ओर किसी एक बाबा की किरपा बरसाने के ढोंग पर कड़ा प्रहार किया जाता है और दूसरी ओर अन्य चैनल पर राशिफल, भाग्योदय के उपाय आदि बताये जाते हैं। उपाय भी ऐसे ऐसे कि अब तो उन पर हँसी भी नहीं आती। शनिवार को उड़द की दाल खाएँ, काले वस्त्र पहनें, शनिवार व मंगलवार को नाखून, बाल, नहीं काटें आदि ऐसे अनेक उपाय बताए जाते हैं।

आपने देखा होगा कि मीडिया द्वारा एक बाबा पर कड़े प्रहार करने

के बावजूद, उनके ढोंग को पूरी तरह से बेनकाब करने के बावजूद उनके एक अनुयायी ने टीवी पर गर्व से कहा कि 'उनके परिवार में सभी पढ़े लिखे, डिग्रीधारी व अच्छे पदों पर नौकरी कर रहे हैं। फ्रिज में जूता रखकर देखो आपके घर में धन-धान्य की वृद्धि अवश्य होगी।' अब इन्हें कौन समझाए कि डिग्रीधारी होना एक बात है और शिक्षित होना दूसरी बात। जिसके पास कोई डिग्री नहीं है लेकिन वह शिक्षित हो सकता है और डिग्रीधारी अशिक्षित तो चारों ओर दिखाई दे ही रहे हैं। और एक बाबा पर प्रहार करने से क्या होगा? एक बाबा की दुकान बंद भी हो गयी तो दूसरा बाबा तैयार हो जायेगा। ऐसी हजारों दुकानें खुली हुई हैं। आवश्यकता तो इस बात की है कि आम जनता को शिक्षित किया जाए, जागरूक किया जाए, उन्हें जगाया जाए। इसलिए आध्यात्मिक सद्गुरु कहते हैं कि जाग जाओ। योग की सारी प्रक्रिया ही जागरण प्रकिया है। न भागो, न भोगो बस, जाग जाओ। जागते ही सत्य तुम्हारे सामने होगा। सत्य तो तुम्हारे सामने है। तुम्हें उसके दर्शन इसलिए नहीं हो रहे हैं कि सोए आदमी को कुछ भी कैसे दिखाई देगा। इसलिए बस जाग जाओ।

अधिकांश शिक्षित कहे जाने वाले लोग अपनी एवं अपने बच्चों की सफलता (शिक्षा के क्षेत्र में, खेलकूद के क्षेत्र में, या अन्य किसी भी क्षेत्र में) का सारा श्रेय किसी देवरे की माताजी/पिताजी को देकर अपने व अपने बच्चों की प्रतिभा का अपमान करते हैं। अब उन्हें कौन समझाए कि यदि देवरे का भोपा आपके बच्चे को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलता दिला सकता है तो उसके बच्चे वही सफलता या उसके समानान्तर सफलता क्यों नहीं प्राप्त कर सके। आर्थिक सम्पन्नता हासिल करने के लिए देवरे पर यदि कोई पाँच हजार चढ़ाता है तो सम्पन्नता

तो बढ़ेगी या नहीं पर तुरन्त उसकी धनराशि में से पाँच हजार की कमी तो हो ही गई। धर्मान्धता की सारी हदें तो तब टूट जाती हैं जब साँप के काटने पर देवरे में मंत्रोपचार, पीलिया का मंत्रोपचार, गर्भाधान/पुत्र उत्पन्न करने के लिए देवरे से प्राप्त लच्छे को बाँधने जैसे उपाय धड़ल्ले से जारी हैं। संयोग से या अन्य कारणों से (देवरे के साथ अन्य उपचार भी किये जाते हैं) यदि उपरोक्त में सफलता मिल जाती है तो सारा श्रेय देवरे का भोपा ले जाता है और देवरों की उक्त तथाकथित गारन्टेड प्रक्रिया से जो जनहानि होती है उसका रिकार्ड उपलब्ध नहीं होता और उक्त जनहानि से प्रभावित व्यक्ति मूढ़तावश देवरों को दोषी मानने को तैयार नहीं होता । वह टोने टोटके की उक्त प्रक्रिया के तहत देवरे के भोपे के निर्देशों की पालना में उसके स्तर पर कोई कमी रह जाने को ही इसका कारण मानकर और अपना दुर्भाग्य मानते हुए स्वीकार कर लेता है। देवरों के इस मक्कड़जाल से आमजन को मुक्त कराना परम आवश्यक है।

'न काष्ठे विद्यते देवो, न पाषाणे न मृण्मये।
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावोहिकारणम्॥

सब जानते हैं (लेकिन मानते नहीं) कि पत्थर मूर्ति में न कोई शक्ति है न कोई परमात्मा है। लेकिन फिर भी गणपति स्थापना/ विसर्जन, दुर्गा पूजा/ विसर्जन, गरबा आदि के नाम पर चंदा वसूली एवं हर प्रकार बिना मेहनत के प्राप्त धन में अपनी सभी मानसिक विकृतियों को पूरा करने की प्रक्रिया धड़ल्ले से जारी है। और इनके तथाकथित धार्मिक कृत्यों में विरोधाभास देखिये कि जिस मूर्ति को घर में स्थापित करते समय पवित्र स्थान/वास्तु के हिसाब से सही कोण, पवित्र समय आदि देखते हैं उसी मूर्ति को बीच सड़क पर रखकर उसके ईर्दगिर्द गरबों के नाम पर फिल्मी गीतों/ धुनों पर मटकना कौनसा धार्मिक पवित्र कार्य है? जिस मूर्ति को सर्वशक्तिमान मानते हुए उसकी पूजा करते हो उससे अपनी रक्षा करने की माँग करते हो, उसी मूर्ति की तुम्हें रक्षा करनी पड़ती है। आए दिन आप अखबार में पढते हैं कि अमुक मन्दिर में चोर मूर्ति के गहने चुरा ले गए, कई बार तो मूर्ति ही उठा ले गये और चोरों का पता भी उस मंदिर का पुजारी या भोपा नहीं लगा सकता। इसके लिए भी सामान्य जन की तरह पुलिस का सहारा लेना पड़ता है फिर भी आँख नहीं खुलती। तब स्पष्ट प्रतीत होता है कि सोए हुए को जगाया जा सकता है लेकिन जागते हुए भी जो तथाकथित धर्म की अफीम के नशे में मदहोश हो उसे नहीं जगाया जा सकता।

सांस्कृतिक प्रदूषण के लिए विदेशी संस्कृति को दोष देना सत्य से मुख मोड़ना है। सत्य तो यह है कि वर्तमान मूढ़ता के लिए हम ही कहीं जिम्मेदार हैं। हम स्वयं व आने वाली पीढ़ी को वेद पढ़ने के लिए, भगवद्गीता के अध्ययन के लिए प्रेरित नहीं करते। सब के घर में श्रीमद्भागवद्गीता है लेकिन पढ़ने के लिए नहीं, पीले कपड़े में लपेट कर उस पर अगरबत्ती घुमाने के लिए। श्रीमद्भागवद्गीता जैसे मार्गदर्शक ग्रन्थ का उपयोग मात्र पूजागृह में रखने या न्यायालय में सच कहने की शपथ हेतु उस पर हाथ रखने से अधिक नहीं हो रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि 'सत्य को ग्रहण करने व असत्य का त्याग करने में सदैव तत्पर रहना चाहिए'। लेकिन आजकल सत्य को जानते हुए भी उसे ग्रहण नहीं करना व असत्य को जानते हुए भी उसका त्याग नहीं करने की प्रवृत्ति जोरों पर है। ऐसे में आवश्यकता है कि सच्ची योग शिक्षा (योग के नाम पर व्यायाम प्रदर्शन नहीं) के माध्यम से लोगों को जगाने का प्रयास जारी रखा जाए। जागो और देखो। इन मानव निर्मित मंदिरों से मुक्त हो जाओ और परमात्मा प्रदत्त मंदिर यानि प्राणी मात्र के हृदय की ओर मुख करो। यह शरीर एक मंदिर है और मन इसके द्वार पर खड़ा है लेकिन उसका मुख बाहर की ओर है इसलिए उसे परमात्मा के दर्शन नहीं हो रहे हैं। बस मन को पीछे मोड़ने की देर है और साक्षात् परमात्मा आपके समक्ष हैं। योग की सारी प्रक्रिया भीतर की ओर लौटने की, अंतर्मुखी होने की है। **'आत्मा वा अरे दृष्टव्यःश्रोतव्यो,मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः'** अष्टांग योग के पाँचवे अंग 'प्रत्याहार' का तात्पर्य ही यही है। ईश्वर निरंजन है, निराकार है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान है इस सत्य को पहचानो और एक ओंकार सतनाम को सार्थक करते हुए ओंकार के सागर में अपने आप को डुबो दो।

'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयातित्यजन्देहं स याति परमां गतिम्'

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा प्रकाशित पत्रिका के माध्यम से जागरण का एक छोटा सा प्रयास मैंने किया है। यदि इस प्रयास में एक भी व्यक्ति जाग जाता है तो यह न्यास की उपलब्धि होगी एवं मेरा सौभाग्य होगा। अन्यथा जैसी प्रभु की इच्छा।

पाखण्डियों का पर्दाफाश करने वाले वीडियो देखने हेतु न्यास की Website Log on करें।
www.satyarthprakashnyas.org

मधुमेह (डायबिटीज) - कारण व उपचार

विमल वधावन 'योगाचार्य'

आनुवांशिकता :- मधुमेह की सम्भावना उन लोगों को भविष्य में अधिक होगी जिनके माता-पिता में से किसी में भी एक को भी यह रोग होगा। उसका कारण है कि रक्त में जब बिना इन्सुलिन के ग्लूकोज बढ़ता जाता है उससे प्रजनन शक्ति की कमी हो जाती है। पुरुषों में वीर्य कमजोर हो जाता है। क्योंकि वीर्य का निर्माण रक्त से ही होना होता है। इसी कारण स्त्रियों के रक्त में ग्लूकोज बढ़ने से उनके रज निर्माण में कमी या कमजोरी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे वीर्य और रज मिलकर जिस बच्चे का निर्माण करते हैं उसे जन्म से ही यह रोग मिल जाता है। जो भविष्य में कभी भी अपने लक्षण दिखा सकता है। परन्तु घबराइए नहीं, आपका अपना संकल्प, घोर तपस्या और ईश्वर का आशीर्वाद आपके इस आनुवांशिक कारण को अवश्य ही समाप्त कर सकता है।

२.आहार दोष :- हमारे शरीर में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा के साथ-साथ अच्छी खासी मात्रा में विटामिन, मिनरल और जल शामिल रहना चाहिए। लेकिन आजकल की जीवन शैली में हम अच्छे से अच्छे पौष्टिक पदार्थों को भी पका-पका कर उनके विटामिन, मिनरल तथा अन्य तत्वों को पूरा नष्ट सा ही कर देते हैं। हमारा भोजन पूरी तरह एसिडिक अर्थात् एसिड उत्पन्न करने वाला बन जाता है। ऐसा भोजन रक्त में एसिड की मात्रा को बढ़ाता है। रक्त में एसिड बढ़ना विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है और एसिड के जमाव विभिन्न अंगों को खराब करते हैं।

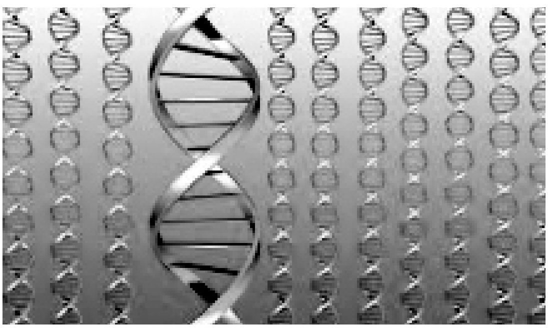

पनीर, टमाटर, हरी सब्जियाँ, दालें आदि पौष्टिक तत्वों से भरपूर रहती हैं परन्तु पका-पका कर और दो-दो, तीन-तीन दिन फ्रिज में रखकर बार-बार गर्म करके खाने से इनकी पौष्टिकता पूरी नष्ट हो जाती है और हम पूरी तरह मृत भोजन करते हैं जो हमारे शरीर की पाचन क्रिया पर बोझ बनकर हमारा मोटापा बढ़ाने, गैस, एसिडिटी पैदा करने, कभी कब्ज और कभी दस्त के अलावा हमें कोई लाभ नहीं देता। हम ऐसे भोजन पर घर में और विवाह शादियों में सारे समाज का सत्यानाश करने के लिए लाखों रुपये खर्च करते हैं। केवल झूठी शान बढ़ाने के अतिरिक्त हम न अपना भला करते हैं न सारे समाज का।

इस आधुनिक युग में एक अत्यन्त हानिकारक पदार्थ "दानेदार चीनी" के रूप में सामान्य जीवन का दैनिक अंग बन गया है। इस चीनी की निर्माण प्रक्रिया को समझ लेना चाहिए।

परमपिता परमात्मा के भण्डार से निकली कोई भी वस्तु व्यक्ति के लिए हानिकारक नहीं होती। प्रकृति ने गन्ना पैदा किया। आपको पता होना चाहिए कि गन्ना स्वाद में मीठा होने के बावजूद भी लौहतत्व (Iron) का भण्डार है। शुगर रूपी बीमारी में शरीर के अन्दर ग्लूकोज स्तर को कम करने में आयरन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गन्ने का रस निकला तो भी आयरन में कमी नहीं आती। इससे गुड़ का निर्माण होता है तो भी आयरन तत्व कम नहीं होता है। परन्तु व्यापारीकरण की तकनीकें सुन्दरता पैदा करने के लिए उसमें कुछ कृत्रिम कैमिकल्स मिला देते हैं जिससे उसका रंग सुन्दर पीले रंग का हो जाए और काले रंग की मैल साफ हो जाए। इसे मसालों वाला गुड़ कहा जाता है जो हानिकारक बन जाता है।

परन्तु आगे देखिए, व्यापारिक प्रवृति किस तरह व्यक्ति का नाश करने के लिए तैयार हो जाती है। ब्रिटिश राज के दौरान भारत में चीनी बनाने की मिलें स्थापित की गईं। चीनी बनाने के लिए गन्ने के रस को इतनी जबरदस्त प्रक्रिया से गुजारा जाता है कि सर्वप्रथम उसके अन्दर शामिल सभी लाभदायक धातुएँ जैसे आयरन आदि पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं। फिर उसके अन्दर सल्फर, जैसे हानिकारक

कैमिकल्स तथा बोनचारकोल मिलाए जाते हैं। ये दोनों तत्व दो कार्य करते हैं-

१.रस को दानों के रूप में परिवर्तित करना।

२.रस के अन्दर शामिल सभी गैर-सफेद कणों को बाहर करके चीनी के दानों को पूरे सफेद रंग रूप में तैयार करना।

बस इस सफेदी और एक रूप दानों में प्रस्तुत करके अपने उत्पादन को देखने में सुन्दर बनाना ही चीनी उत्पादकों का कार्य है। परन्तु अंग्रेज कौम इतने दूषित मन की कौम थी कि इनके प्रत्येक कार्य पर हमारे पूर्वज देशभक्त ऋषि संदेह की दृष्टि ही रखते थे चाहे वह कार्य देखने में कितना ही कल्याणकारी लगे। चीनी के रूप में अब एक ऐसा पदार्थ तैयार हो गया जो उन व्यापारी अंग्रेजों की तिजोरियाँ भरने के लिए पर्याप्त था। इनका व्यापारिक लक्ष्य पूरा हो गया। लेकिन इन मूर्ख अंग्रेजों, उनके वैज्ञानिकों और व्यापारियों को इस अलौकिक सिद्धान्त का अहसास तक भी नहीं था कि जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वही गड्ढा उसकी क्रब भी बन सकता है। आज यही हो रहा है। हमारे मन की वस्तु स्थिति यह है कि शुगर जैसी भयंकर बीमारी से ग्रस्त केवल भारतवासियों की ही चिन्ता हमें नहीं सता रही। हमारा मन इस बात से दुःखी रहता है कि सारे संसार के लोग इन मूर्ख सफेद चमडी वालों के कुकृत्यों से परेशान हो रहे है। सबसे अधिक शुगर बीमारों की प्रतिशत संख्या तो पश्चिमी देशों जैसे इंग्लैण्ड, अमेरिका में ही है। इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation) ने यह अनुमान जारी किया है कि वर्ष २०२५ तक विश्व की लगभग ८० प्रतिशत से अधिक जनसंख्या डायबिटीज रोग से ग्रस्त हो जायेगी। अब निर्णय आपको करना है कि आप वर्ष २०२५ में ८० प्रतिशत लोगों में शामिल रहने के लिए तैयार हैं या २० प्रतिशत स्वस्थ लोगों में रहना चाहते हैं।

चीनी न खुद खाओ न किसी अन्य को खाने दो। यही सबसे बड़ा परोपकार होगा।

जरा, चीनी में मिले उस बोनचारकोल कैमिकल की वास्तविकता भी समझ लो कि ये क्या बला है। बोन का अर्थ है हड्डी। हड्डियों के चूरे को ही बोनचारकोल कहा जाता है। अब आप स्वयं अनुमान लगाइए कि आप कितने शाकाहारी हैं, कितने वैदिकधर्मी हैं, कितने जैन हैं, और कितने धार्मिक हैं। जो माँस तो नही खाते परन्तु अज्ञानता वश हड्डियों के चूरे से साफ हुई सफेद-सफेद चीनी से बनी मिठाइयाँ, बिस्कुट, चॉकलेट, कैम्पाकोला आदि कैसे एक दूसरे को बधाईयाँ देते-देते चट कर जाते हैं। क्या लाभ होगा आपकी बधाईयों का, कितनी चिर स्थाई होंगी आपकी खुशियाँ जिनमें मांसाहार का आधार होगा और क्या हालत होगी आपके शरीरों की जब ग्लूकोज स्तर शरीर में बढ़ने से किडनियाँ खराब होंगी, ब्लड प्रेशर बढ़ेगा, हड्डियों में दर्द होगा, पाँवों से चला नहीं जायेगा, आँखें अंधी हो जायेंगी?क्या तब तक माँसाहारी चीनी मिठाईयों से बधाइयाँ चलती ही रहेंगी?आज के आधुनिक युग का यही एक यक्ष प्रश्न है।

शराब का दुष्प्रभाव- आधुनिक युग में शराब का बढ़ता प्रचलन मधुमेह के साथ-साथ कई अन्य रोगों का भी कारण बन जाता है। शराब एक ऐसे तरल पदार्थ का नाम है जो इथनौल नामक रसायन से बनती है। यह कार्बनिक तरल होता है। सेवन के बाद यह तरल पदार्थ सीधा और तुरन्त रक्त में अवशोषित हो जाता है। सर्वप्रथम इसका प्रभाव सेवन के एक मिनट बाद ही मस्तिष्क में पहुँच जाता है मस्तिष्क से यह प्रभाव तंत्रिका तंत्र में संचारित होता है। तंत्रिका तंत्र के असंतुलन से व्यक्ति का व्यवहार भी असंतुलित और हिंसक होने की सम्भावनाएँ अधिक हो जाती हैं। शराबयुक्त रक्त जब लिवर में पहुँचता है तो लिवर का कार्य भी भयंकर रूप से प्रभावित हो जाता है। लिवर का काम है भोजन के रस में शामिल विषैले तत्त्वों के प्रभाव को समाप्त करना। भोजन के विषैले तत्त्व भी रक्त के माध्यम से ही लिवर में पहुँचते हैं। इन विषैले तत्त्वों में पोषक तत्व भी अधिक मात्रा में होते हैं, जबकि शराब के इथनौल रसायन में पोषक तत्व होते ही नहीं। शराब के सेवन से लिवर के सेल पहले शराब के विषैले तत्त्वों को नष्ट करने लग जाते हैं। इस कार्य में सामान्य से अधिक समय भी लगता है। इस प्रकार लिवर का कार्यभार बढ़ जाता है। लिवर को भोजन के विषैले तत्त्वों को नष्ट करने का समय ही नहीं मिलता। इससे लिवर में ये विषैले तत्त्व जमा होने से कुछ बाद लिवर में मोटापा आ जाता है। लिवर के सेल अधिक कार्य करते-करते थककर स्वयं नष्ट हो जाते हैं।

विषैले तत्त्वों से युक्त रक्त सारे शरीर में ऐसे ही घूमता रहता है। इससे शरीर के किसी भी अंग के रोगग्रस्त होने की सम्भावना बनी रहती है। इसी प्रकार तम्बाकू तथा उससे बने समस्त उत्पादों के सेवन से रक्त में विषैले तत्त्वों की मात्रा तथा उनका प्रभाव बढ़ जाता है। चाय के सेवन से भी विषैली रासायनिक क्रिया के अतिरिक्त पाचन क्रिया भी बाधित होती है। इस प्रकार के विषैले रक्त में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर और अधिक खतरनाक हो जाता है।

{बोन चारकोल- पशुओं की हड्डियों को जब ऑक्सीजन रहित परिवेश में ४ से ५ °C पर गर्म किया जाता है तो बोन चारकोल बनता है। मैल, रंग आदि की जबर्दस्त अवशोषण क्षमता के कारण चीनी मिलों में चीनी रिफाइनिंग के कार्य में इसका प्रयोग होता है। १८१२ ई. में इस तकनीक का पेटेन्ट कराया गया था। अन्य तकनीकों में grannular Carbon तथा Ion exchange तकनीक हैं जो अपेक्षाकृत महँगी है। अतः बोन चारकोल का प्रयोग आज भी विश्व में होता है। रिपोर्ट्स के अनुसार भारतीय गाय के Pelvic Region का प्रयोग विशेष प्रचलित है। भारतीय चीनी मिलें दावा करती हैं कि वे चीनी रिफाइनिंग प्रक्रिया में बोन चारकोल का प्रयोग नहीं करती हैं। - सम्पादक}

क्रमशः ....

काव्य सुधा

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश

हल करता समस्यायें

तम के बादल छट जाते हैं मिट जाती हैं शंकाएँ।
मथा हुआ मक्खन है अनुपम दयानन्द के ज्ञान का
सच और झूठ की खरी कसौटी धर्म और विज्ञान का,
वसुन्धरा को तेजोमय कर सब को देती शिक्षाएँ।
धर्म का सच्चा रूप प्रदर्शित होता इसके अध्ययन से,
जीवन नन्दन बन जाता है
आध्यात्म ज्ञान और चिन्तन से।
ऋषि के अवलम्बन से छट जाती हैं चिन्तायें।
जिसको पढ़कर थर थर करता धर्मधीश ढोंगी महन्त,
घबराता जिसके सम्मुख मत मजहब और झूठा पंथ।
आपाधापी, उधेड़बुन और पाप से हमें बचायें।
धर्म नाम पर आज जगत् में जो भी करता है वंचन,
ऐसे नीच,पतित,कपटी से करवाते रहते वर्जना।
वज्राघात यह तीक्ष्ण प्रहार है दम्भी जिससे थर्रायें।
नीरस जीवन में भर देता सुधा सिन्धु संतर्पण,
मानवता के शत्रु को पल पल करता संतर्जन ।
संतरी बनकर सदा खड़ा है चाहे जो संकट आयें।
अन्तर्मन को उद्वेलित कर भरता आध्यात्मिक ऊर्जा,
दयानन्द की सधी चोट से टूटा पाखण्डी पुर्जा।
करे पार भव से संजय को दूर हटा सब बाधायें।

संजय सत्यार्थी
नेमदार गंज, नवादा, बिहार

सत्यार्थ प्रकाश

अनूप वरदान थे

ज्ञानवान, मतिमान, छविमान, गुणखान,
दयानन्द सरस्वती मनुज महान् थे ।
चतुर्वेद–ज्ञान का प्रकाश बिखराया किये,
जग हित नव दिनकर के समान थे।
'सत्यार्थ प्रकाश' रच काम अभिराम किया,
सत्य शिव सुन्दर थे, भारत की शान थे ।
प्रेम और सौहार्द की बहाते रहे रसधार
हिन्दी–अनुरागी थे अनूप वरदान थे ॥

डॉ. मिर्जा हसन नासिर
लखनऊ २२५००७

सच्ची बोध रात्रि हो जाए

उस दिन बोध हुआ ऋषि को ।
पर हमें आज तक हो ना पाया, आज आर्यजन बोध करें तो।
सच्ची बोध रात्रि हो जाए, और वह धरा स्वर्ग बन जाए ॥
उस रात मूल ने देखा था,
पिंडी पर चूहा चढ़ते हुए
यह शिव तो नकली है बच्चे ने तुरन्त निर्णय लिए ।
और हम सब कुछ जानते समझते हुए,
अब तक न छोड़ पाये मूर्तिपूजा
कर रहे हैं व्रत शिवरात्रि का,
हमारी बहनें तो नहीं छोड पा रहीं
झूठे पाखण्डों,उपवासों को, ऋषि की संस्थाओं से जुड़कर
हम अपनी पदों की भूख कर रहे हैं शान्त
नहीं आती है हमें लाज
ऋषि का कैसे पूर्ण होगा काज
ईश्वर कृपा कर सद्बुद्धि देवें,
या तो ऐसे लोग बन जायें सच्चे आर्य
या स्वयं देवें पदों को त्याग, अगर इन्हें बोध हो जाए,
तो यह धरा स्वर्ग बन जाये।
ऋषि ने बतायी, वर्ण व्यवस्था
गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर,
ऊपरी मन से तो बताते हैं इसे सही
पर मानते हैं जन्म के आधार पर
बडे–बडे गुरुकुल भी कुछ नहीं कर पाए
इस व्यवस्था को आज तक न बदल पाए
परिणाम हम भी जन्मगत जाति में फँसे रहे
इस ओर भी आर्यों, कुछ हो जाए,
तो यह धरा स्वर्ग बन जाये।
और भी बताया था ऋषि ने हमें सोते से जगाया था ऋषि ने
प्राचीन आश्रम व्यवस्था का महत्व समझाया था ऋषि ने
पर हम स्वयं को ऋषि से बडा समझने लगे
उनकी बात तो मानी नहीं, व्यर्थ के तर्क करने लगे
पूछने लगे कहाँ हैं जंगल,
कैसे लें वानप्रस्थ व संन्यास
क्योंकि हमें तो जीवन पर्यन्त रहना गृहस्थ में अरे आर्यो
यदि हम आश्रम व्यवस्था को अपनायें
तो यह धरा स्वर्ग बन जाये।
ऋषि ने कहा था बनाओ 'राजार्य सभा'
हम डरने लगे राजनीति में जाने में
कहते रहे ८० प्रतिशत आर्य थे आजादी की लडाई में,
पर अब देश की बागडोर सँभालने में क्या है प्रतिशत?
एक आधे हैं भी तो विभिन्न दलों के पिछलग्गू बनकर,
'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' मात्र नारा ही रह गया
आर्य बन्धुओं, अब भी यदि तुम बोध करो
तो यह धरा स्वर्ग बन जाए, सच्ची बोध रात्रि हो जाए।

राजेन्द्र कुमार आर्य
एफ ८ आर्य निकुंज, अंजली विहार, बारां रोड

ऐसे तमोमय काल में,
सहसा किरण सी भानु की
इस देश की संचित तपस्या ही हुई साकार ज्यों,
सशरीर जैसे सत्य हो,
फिर से हुआ गुजरात में अवतरण अभिनव तेज का,
जिसको स्वतः ही देवताओं की मिली
श्री, शक्ति, सिद्धि, विभूति, धी
आयुध नये ही ज्ञान के।
दी इन्द्र ने निज वज्र की दृढ़ता उसे,
हरि ने दिया निज चक्र वाग्विभूति का,
शिव ने दिया वह दिव्य सत्य त्रिशूल जो,
निष्फल नहीं होता कभी।
यों पुण्य फल सा वृद्ध भारत–भूमि का,
ऋषि मुनि तपस्वी,सिद्ध संतों की समन्वित ज्योति–सा
नव वेदों का हुआ अवतरण फिर ।

– कविवर गुलाब खण्डेलवाल

'REGISTERED' RAJHIN/2012/47777

उस दिन बोध हुआ था ऋषि को,
आज आर्यजन बोध करें
यदि तो यह धरती स्वर्ग बन चले!
उस दिन सूर्य बना था ऋषि वह,
आज उसी की किरण बनें हम
यदि तो तम का व्यूह कट चले!

बोधरात्रि पर विशेष

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य